सृजन

विभागीय हिंदी पत्रिका

वर्ष-2025 अंक-प्रवेशांक

मानव संसाधन विकास महानिदेशालय,
(आई एंड डब्ल्यू/ईएमसी)
साकेत, दिल्ली

मानव संसाधन विकास महानिदेशालय (आई एंड डब्ल्यू), साकेत टीम- बायें से दांये- डॉ. दिनेश कुमार जांगिड (अपर निदेशक), श्री अमित कुमार मिश्रा (अपर निदेशक), श्री वाल्टे वुन्जामुअन (प्रधान महानिदेशक), श्रीमती मीनू कुमार (अपर महानिदेशक), श्री मनोज कुमार (अपर निदेशक), डॉ. गणेश पोटे (संयुक्त निदेशक)

बायें से दायें- डॉ. गणेश पोटे (संयुक्त निदेशक) डॉ. दिनेश कुमार जांगिड (अपर निदेशक), श्रीमती मीनू कुमार (अपर महानिदेशक), श्री मनोज कुमार (अपर निदेशक), श्री अमित कुमार मिश्रा (अपर निदेशक)

आधारभूत सरंचना, भूमि एवं तैयार आवास शाखा, मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत की टीम के साथ टीम प्रभारी अपर निदेशक श्री मनोज कुमार एवं सहायक निदेशक श्री राजेश कुमार चाहर

प्रवेशांक

सृजन

वर्ष-2025-26

मानव संसाधन विकास महानिदेशालय की विभागीय हिंदी पत्रिका

सरंक्षक

वाल्टे वुन्जामुअन (प्रधान महानिदेशक)

प्रधान संपादक

मीनू कुमार (अपर महानिदेशक)

प्रबंध संपादक

अमित कुमार मिश्रा (अपर निदेशक)

संपादक

डॉ. दिनेश कुमार जांगिड (अपर निदेशक)

उप-संपादक

धर्मपाल (सहायक निदेशक, राजभाषा)

सह-संपादक

रश्मि यादव (कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी)

अनुक्रमणिका

क्र.	रचना	पृष्ठ सं
1	अध्यक्ष महोदय का संदेश	3
2	सदस्य महोदया का संदेश	4
3	प्रधान महानिदेशक महोदय का संदेश	5
4	सरस्वती वंदना	6
5	प्रधान संपादक/अपर महानिदेशक महोदया का संदेश	7
6	संपादकीय	9
7	महानिदेशालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियां	11
8	भारत की एक मजबूत भुजा-उत्तर-पूर्व राज्य- वाल्टे वुन्जामुअन	21
9	महिला सशक्तिकरण- दशा एवं दिशा- मीनू कुमार	25
10	सर्वे भवंतु सुखिनः- डॉ. दिनेश कुमार जांगिड	27
11	सीबीआईसी कार्यालयों में बुनियादी ढांचे का विकास- डॉ. गणेश पोटे	31
12	हिंदी की वर्तमान दशा एवं दिशा- धर्मपाल	33
13	गीतकार शैलेन्द्र- लाजपत राय	35
14	हनुमान जी की लंका यात्रा की सीख- विक्रम सिंह	37
15	आधुनिक मनोवैज्ञानिक समस्याएं- अमरनाथ प्रसाद	39
16	मनालीः शांति और सुकून का सफर- रश्मि यादव	41
17	वस्तुज्ञान और व्यक्तिज्ञान- स्वाति रानी	45
18	आओ आओ रील बनाएं- डॉ. दिनेश कुमार जांगिड	47
19	समय- शिवधनी यादव	48
20	अपनी राह तू चल अकेला- अनिल कुमार, उसे उधार दो- अल्पना गुप्ता	49
21	हर बात लिखी नहीं जा सकती- पूजा गुप्ता	50
22	तारे एवं गुलदस्ता- लोय जुलियस	51
23	मंगल प्रसाद की शहर यात्रा- भूमिका गौतम	52
24	भगत सिंह- हर्ष कार्तिकेय मिश्रा	53
25	भरतनाट्यम- हर्षिका कीर्ति मिश्रा	54
26	दो लघु कथाएं- राहुल देव	55
27	नन्ही कूंची से....	56

अस्वीकरण - इस पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संजय कुमार अग्रवाल
अध्यक्ष
Sanjay Kumar Agarwal
Chairman

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
राजस्व विभाग
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

शुभ-संदेश

मुझे यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत प्रथम बार विभागीय हिंदी पत्रिका 'सृजन' का प्रकाशन आरंभ करने जा रहा है।

भारत की राजधानी दिल्ली 'क' क्षेत्र में होने के कारण हम सबका यह दायित्व है कि सरकारी कामकाज में हिन्दी का ही प्रयोग करें। इस दिशा में, 'सृजन' के प्रवेशांक का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कदम है। कार्यालय में हिन्दी में काम करने का वातावरण तैयार करने तथा राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से यह प्रयास निःसंदेह ही सराहनीय है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिंदी पत्रिका के प्रकाशन से इस महानिदेशालय के प्रतिभावान अधिकारियों एवं कर्मचारियों को न केवल अपनी लेखन प्रतिभा को प्रदर्शित करने का सुअवसर प्राप्त होगा, बल्कि कर्मचारीगण इस सकारात्मक माहौल में पत्रिका से प्रेरणा ले कर अपना कार्य हिन्दी में करने के लिए अग्रसर होंगे । हिंदी हमारी राजभाषा है और इसकी प्रगति के लिए इस तरह के प्रयास निरंतर चलते रहने चाहिए, ऐसी मेरी मान्यता है।

मैं उन अधिकारियों को बधाई देना चाहता हूं जिन्होने इस महानिदेशालय में पहली बार इस तरह के कार्य को आरंभ करने के बारे में सोचा एवं इसे मूर्त रूप देने की दिशा में कार्य किया। विभागीय हिंदी पत्रिका 'सृजन' का यह अंक हिन्दी को समृद्ध एवं लोकप्रिय बनाने में सहायक हो, यही मेरी शुभ कामना है।

संजय कुमार

नई दिल्ली, 15-09-2025

(संजय कुमार अग्रवाल)

अरूणा नारायण गुप्ता
विशेष सचिव एवं सदस्य
Aruna Narayan Gupta
Special Secretary & Member

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
राजस्व विभाग
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

संदेश

हिंदी हमारी राजभाषा है और भारतीय संविधान का अनुच्छेद 351 हमें यह निर्देशित करता है कि हम राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करें तथा भारत को एकता के सूत्र में पिरोने वाली हिंदी के विकास में अपना सतत् एवं सक्रिय योगदान दें।

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि संविधान की इसी भावना को समझते हुए मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत द्वारा पहली बार विभागीय हिंदी पत्रिका 'सृजन' का प्रकाशन किया जा रहा है। इस प्रकार के प्रयास राजभाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान देते हुए भारत संघ के कार्मिकों को राजभाषा में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं और हिंदी को आम लोगों में लोकप्रिय बनाने में अहम भूमिका अदा करते हैं।

मैं 'सृजन' के संपादक-मंडल और समस्त महानिदेशालय परिवार को बधाई देती हूँ तथा यह कामना करती हूँ कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार की यह गति इस तरह के प्रकाशनों के माध्यम से अनवरत बनी रहे।

अरूणा नारायण गुप्ता

नई दिल्ली, 15-09-2025

संदेश

किसी भी देश के लिए उसकी भाषा सदैव एक गर्व का विषय होती है। भाषा मात्र एक भाषा अथवा लिपि न होकर सदियों से संचित संस्कारों का प्रवाह भी होती है। किसी भी राष्ट्र के लिए इससे अच्छा क्या हो सकता है कि उसके सभी नागरिक अपनी एक भाषा को संपर्क और राजकाज की भाषा बनाकर एक दूसरे से जुड़े रहें।

हिंदी हमारी राजभाषा तो है ही, यह भारत के प्रत्येक नागरिक को अन्य नागरिकों से जोड़ने वाला एक धागा भी है जिसमें अन्य सभी भाषाओं के फूलों को भी पिरोया गया है। इस देश को एकता के सूत्र में बांधने में हिंदी का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

मेरे लिए यह बड़ी ही प्रसन्नता का विषय है कि मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत कार्यालय द्वारा पहली बार विभागीय हिंदी पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया जा रहा है। इस प्रयास से न केवल कार्यालय में हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा बल्कि सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक शक्ति का परिचय भी हमें मिलेगा। यह उन लोगों के लिए भी एक बेहतरीन अवसर हैं जो हिंदी में अपनी अभिव्यक्ति को एक मंच प्रदान करना चाहते हैं।

मैं विभागीय हिंदी पत्रिका 'सृजन' की समस्त टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें प्रेषित करता हूं जिनके अनवरत एवं अथक प्रयास से इस कार्यालय में इस नेक कार्य का शुभारंभ किया गया है।

नई दिल्ली, 15-09-2025

वाल्टे वुन्जामुअन
प्रधान महानिदेशक

सरस्वती वंदना

शारदे माँ मैं करूं तेरा वंदन
शारदे माँ मैं करूँ तेरा वंदन..!!!

सच्ची रहे सदा मेरी वाणी
हे जगत की माँ कल्याणी
वर देना माँ मुझको इतना
कर्म हो मेरे जैसे चंदन...!!!

मंत्र भले ही ना पढ़ पाऊँ
पर हित हेतु हाथ उठाऊँ
मैं भी थोड़ा कम कर पाऊँ
इस जग के लोगों का क्रंदन...!!!

जग करता है पूजा तेरी
सुनलो माँ यह विनती मेरी
ऐसा ज्ञान हमें दो माता
मिट जाये सारे भव बंधन...!!!

तम रूपी अज्ञान भगाओ
सर्वत्र ज्ञान प्रकाश फैलाओ
'सारंग' पशु विहग और मानव
करते हैं तेरा अभिनंदन...!!!

डॉ. दिनेश कुमार जांगिड 'सारंग'

एक सुखद शुरूआत...

अपनी राजभाषा एवं मातृभाषा में कार्य करना किसी भी व्यक्ति के लिए एक गर्व एवं संतोष का विषय होता है। राजभाषा हिंदी का कार्यालयी कामकाज में प्रयोग करना तो हमारा दायित्व है ही, साथ ही इसका अन्य उपयुक्त मंचों के माध्यम से प्रचार प्रसार करना भी हमारे संविधान का सम्मान करना है।

अपने सरकारी जीवन में मैंने हिंदी का प्रचार प्रसार करने का यथासंभव प्रयास किया। जब मैंने मानव संसाधन विकास महानिदेशालय में पदभार ग्रहण किया और राजभाषा की अपनी पहली तिमाही बैठक में यह जानकारी प्राप्त हुई कि इस कार्यालय द्वारा अभी तक कोई भी विभागीय हिंदी पत्रिका का प्रकाशन नहीं हुआ है तो मन में उसी समय यह संकल्प लिया कि इस कार्यालय से भी हिंदी पत्रिका का प्रकाशन होना चाहिए।

मेरे लिए यह एक अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है कि हमारा वो संकल्प आज साकार होने जा रहा है। मानव संसाधन विकास महानिदेशालय की पहली विभागीय हिंदी पत्रिका 'सृजन' आज सुधी पाठकों के हाथों में है। यह पत्रिका हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरुचि, रचनात्मकता तथा अभिव्यक्ति का एक मंच है, जो भाषा के माध्यम से हमारी विविधता और सृजनशीलता को एक सूत्र में पिरोती है।

'सृजन' का उद्देश्य केवल साहित्यिक रचनाएँ प्रकाशित करना ही नहीं है, बल्कि कार्यालयीन जीवन के अनुभवों, प्रेरणादायक प्रसंगों, सांस्कृतिक गतिविधियों और विभागीय उपलब्धियों को भी संजोकर पाठकों तक पहुँचाना है। यह पत्रिका हमें न केवल अपनी भाषा के प्रति आत्मीयता बढ़ाने का अवसर प्रदान करती है, बल्कि सहकर्मियों के विचारों और उनके दृष्टिकोण से भी परिचित कराती है।

मुझे यह आशा है कि यह परंपरा निरंतर जारी रहेगी और हर अंक में नए विचार, नए स्वर और नई ऊर्जा लेकर आपके सामने उपस्थित होगी और यह पत्रिका 'सृजन' सचमुच एक सामूहिक सृजन का मंच बन सकेगी।

अंत में, इस प्रथम अंक को साकार रूप देने में योगदान देने के लिए इसके संपादक डॉ. दिनेश कुमार जांगिड एवं सभी सहयोगियों का मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। मुझे विश्वास है कि 'सृजन' महानिदेशालय परिवार के बीच संवाद, अभिव्यक्ति और प्रेरणा का सेतु बनेगी।

मीनू कुमार
अपर महानिदेशक

नई दिल्ली, 15-09-2025

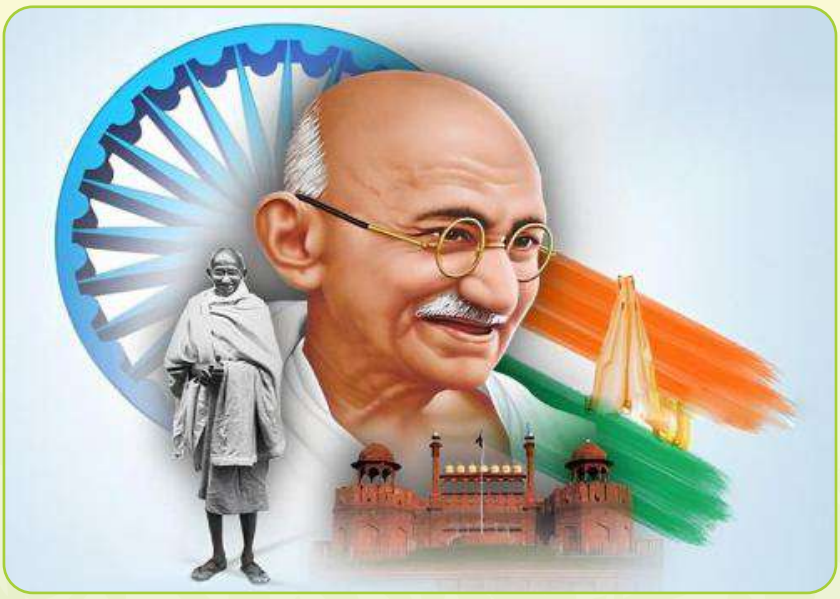

महात्मा गांधी और हिंदी पर उनके विचार

"हिंदी ही वह एकमात्र भाषा है जो पूरे भारत को एक सूत्र में बाँध सकती है।"

(यंग इंडिया, 1925)

"हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का मेरा आग्रह केवल इसलिए है कि इसे भारत के करोड़ों लोग समझते और बोलते हैं।"

(हरिजन, 1936)

"हिंदी को संस्कृतनिष्ठ या फारसीनिष्ठ बनाने की आवश्यकता नहीं है। इसे सरल और बोलचाल की भाषा रहना चाहिए, ताकि यह सबकी भाषा बन सके।"

(हरिजन, 1938)

"हिंदुस्तानी ही हमारी साझा भाषा है। यह देवनागरी और उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सकती है और भारत के हर वर्ग को अपनी लग सकती है।"

(हरिजन, 1935)

"मातृभाषा में शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है। हिंदी का माध्यम अपनाकर हम शिक्षा को अधिक प्रभावी और सार्थक बना सकते हैं।"

(हिंद स्वराज, 1909)

यात्रा निरंतर जारी है.....

भारतीय राजस्व सेवा की अब तक की 15 वर्षीय यात्रा में मेरा राजभाषा हिंदी से बड़ा ही मधुर एवं अटूट संबंध रहा है। कार्यालय में हिंदी में कामकाज के अलावा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से विचारोभिव्यक्ति का मौका भी हमेशा मिलता रहा है।

विभागीय पत्रिकाओं से मेरा जुड़ाव परिवीक्षा काल में मुंबई से ही आरंभ हो गया था जब मैंने नासिन मुंबई की पत्रिका 'वोयेज' का पहली बार संपादन किया। उसके पश्चात त्रिची, अहमदाबाद और दिल्ली में कावेरी धारा, सेवाकर भारती, कर्णावती दर्पण, बोधिनी, निवारिका सहित अनेक पत्रिकाओं के संपादन का मौका मुझे मेरे अधिकारियों ने दिया है।

मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत द्वारा अभी तक किसी भी विभागीय हिंदी पत्रिका का प्रकाशन नहीं किया गया था। इस कार्यालय में जब नई अपर महानिदेशक के रूप में श्रीमती मीनू कुमार ने पदभार ग्रहण किया और राजभाषा की अपनी पहली ही तिमाही बैठक में उन्होंने इस कार्यालय में भी विभागीय हिंदी पत्रिका के प्रकाशन की इच्छा जाहिर की तो मुझे अत्यंत हर्ष हुआ कि आखिर इस कार्यालय में भी यह काम आरंभ होगा। यह खुशी और भी बढ गई जब अपर महानिदेशक महोदया ने इस पत्रिका के संपादन का कार्य भी मुझे दे दिया। उनकी इच्छा के अनुरूप मैंने तुरंत इस पर अमल करना शुरू कर दिया। यह पहला ही अंक था, सामने कोई पूर्ववर्ती कार्य या उदाहरण भी नहीं था, ना कोई नाम भी तय था, तो इस यात्रा को शून्य से ही आरंभ करना पड़ा और मैडम मीनू कुमार के सहयोग और निर्देशन में सबसे पहले 'सृजन' नाम तय कर इस पत्रिका के सृजन की यात्रा चल पड़ी।

पत्रिका के लिए कार्यालय में कार्यरत सभी सहयोगी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को रचनाएं देने के लिए आग्रह किया गया और अनेक साथी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़े ही उत्साह से अपनी रचनाएं प्रकाशनार्थ प्रस्तुत की। हमारे प्रधान महानिदेशक महोदय श्री वाल्टे वुन्जामुअन, अपर महानिदेशक महोदया श्रीमती मीनू कुमार सहित अनेक अधिकारियों ने इसमें व्यक्तिगत रूचि लेकर अपनी रचनाएं दी। मैं सभी रचनाकारों को इसके लिए बधाई एवं धन्यवाद प्रेषित करता हूं।

मेरा यह मानना है कि विभागीय हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन हरेक कार्यालय को करना चाहिए। मात्र औपचारिकता समझ कर नहीं बल्कि अपनी जिम्मेदारी समझ कर रूचि और आनंद के साथ यह कार्य करना चाहिए।

'सृजन' मात्र एक विभागीय हिंदी पत्रिका ही नहीं है बल्कि यह सृजनात्मक संतुष्टि का एक दस्तावेज भी है। इस पत्रिका में विविधता है। जिंदगी के रंग है। इस कार्यालय की विभिन्न गतिविधियां हैं। इस कार्यालय के विभिन्न मंडलों के कार्यों का लेखा-जोखा है। इस पत्रिका में हिंदी साहित्य की विधा के विभिन्न रंग भी हैं। कविताएं हैं तो कहानियां भी हैं। यात्रा वृतांत है तो विचारपरक लेख भी हैं। जीवनी है तो साथ ही उत्तर-पूर्व की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक जानकारी भी है। इस कार्यालय द्वारा प्रायोजित कल्याण योजनाओं की जानकारी भी है, तो आधारभूत ढांचे के विकास पर चर्चा भी है। हास्य-व्यंग्य है तो नन्हें कलाकारों की कूची भी दिखाई दे जाती है। कुल मिलाकर हमने इस 'सृजन' पत्रिका में गागर में सागर भरने का कार्य करने का प्रयास किया है।

विभागीय हिंदी पत्रिकाओं से एक बात और भी सामने आती है। कई अधिकारी एवं कर्मचारी जो लिखना तो चाहते हैं या फिर लिखते भी हैं लेकिन कहीं प्रकाशित होने का मौका नहीं मिलता, उनके लिए यह एक बहुत ही उपयुक्त मंच है। मैंने अपनी विभागीय पत्रिका की यात्रा में यह बात महसूस की है। कई ऐसे अधिकारी एवं कर्मचारी भी देखें हैं जो सबसे पहले इसी तरह की विभागीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए और बाद में अन्य प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे हैं। इस तरह से विभागीय पत्रिकाएं उनके अंदर छुपे लेखक को आगे लाने में महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है।

'सृजन' के संपादन की जिम्मेदारी देने के लिए मैं अपर महानिदेशक महोदया श्रीमती मीनू कुमार का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। हमारे प्रधान महानिदेशक श्री वाल्टे वुन्जामुअन साहब का आशीर्वाद भी हमें हर कदम पर मिला है। चाहे उनका संदेश हो अथवा उनकी इस पत्रिका में रचना हो या कोई भी मार्गदर्शन हो, उनको हमने सदैव सहजता के साथ उपलब्ध पाया है। पत्रिका के प्रबंध संपादक एवं मेरे साथी अधिकारी श्री अमित कुमार मिश्रा साहब का इसके प्रकाशन में सहयोग के लिए मैं आभारी हूं। अपर निदेशक श्री मनोज कुमार एवं मेरे साथी संयुक्त निदेशक श्री गणेश पोटे का भी सकारात्मक सहयोग हमें मिला हैं। राजभाषा के सहायक निदेशक श्री धर्मपाल एवं कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी श्रीमती रश्मि यादव का भी में संपादन के विभिन्न आयामों में सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूं।

भाषा हमारी मां जैसी होती है। जैसे हरेक व्यक्ति को अपनी मां पर गर्व होता है वैसे ही अपनी भाषा पर भी गर्व होना चाहिए। हिंदी ना केवल हमारी राजभाषा है बल्कि करोड़ो भारतीयों को मिलाने वाला एक धागा भी है। अपनी भाषा का ज्ञान और उसमें राजकीय कार्य करना हमारा कर्त्तव्य भी है और हमारा गर्व भी। वरना भारतेन्दु हरिश्चंद्र की यह पंक्तियां आपको थोड़ा तो सोचने के लिए मजबूर कर ही देगी-

अंग्रेजी पढ़िके जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा ज्ञान के, रहत हीन के हीन

नई दिल्ली, 15-09-2025

डॉ. दिनेश कुमार जांगिड
संपादक

हिंदी पखवाडा-2024

मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं महानिदेशालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु हिंदी पखवाड़ा-2024 का आयोजन दिनांक 13-09-2024 से 27-09-2024 तक किया गया।

वर्ष 2024-2025 में हिंदी पखवाड़ा के तहत कुल 5 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं इसके साथ ही हिंदी दिवस के उपलक्ष पर महानिदेशालय में लघु पुस्तक मेला, कैलीग्राफी प्रदर्शनी, मुंशी प्रेम चंद की कहानी 'पूस की रात' का मंचन, काव्य सम्मेलन, समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता, हिंदी कविता पाठ एवं कार्यालय हिंदी शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कुल 51 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रशस्ति पत्र एवं प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को क्रमशः 1500, 1000 एवं 700 रुपये का नकद ईनाम भी दिया गया।

हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

दिनांक 18-09-2024 को हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को दी गयी परिस्थितियों पर टिप्पण एवं मसौदा लेखन का कार्य करना था। इस प्रतियोगिता में कुल 11 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर तकनीकी अधिकारी श्री संदीप कुमार, द्वितीय स्थान पर आशुलिपिक ग्रेड-I सुश्री स्वाति रानी एवं तृतीय स्थान पर अपर सहायक निदेशक श्री मेहर चंद रहे।

हिंदी निबंध प्रतियोगिता

दिनांक 19-09-2024 को हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को निबंध लिखने हेतु 4 विषय दिए गये थे, जिनमें से किसी एक विषय पर 1000 शब्दों में निबंध लिखना था। इस प्रतियोगिता में महानिदेशालय के 11 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रथम स्थान पर कार्यकारी सहायक श्री हरीश कुमार, द्वितीय स्थान पर तकनीकी अधिकारी श्री विनय भाटी एवं तृतीय स्थान पर कार्यकारी सहायक श्रीमती प्रीति वाजपेयी रही।

कार्यालय हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता

दिनांक 20-09-2024 को कार्यालय हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के हिंदी एवं अंग्रेजी के प्रशासनिक शब्द ज्ञान की परीक्षा ली गयी। कार्यालय हिंदी शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कार्यकारी सहायक श्री नवीन कोडान, द्वितीय स्थान पर आशुलिपिक ग्रेड-I सुश्री स्वाति रानी एवं तृतीय स्थान पर अपर सहायक निदेशक श्रीमती पूजा गुप्ता रही।

हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता

दिनांक 23 सितंबर 2024 को महानिदेशालय में हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 9 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को अपनी पसंद की कविताओं का वाचन करने को कहा गया। हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता में महानिदेशालय के अपर निदेशक डॉ. दिनेश कुमार जांगिड महोदय एवं उप निदेशक श्रीमती कनिका शर्मा महोदया निर्णायक मंडल के सदस्य रहे। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर तकनीकी अधिकारी श्री संदीप कुमार, द्वितीय स्थान पर अपर सहायक निदेशक श्रीमती अल्पना गुप्ता एवं तृतीय स्थान पर वरिष्ठ निजी सचिव श्रीमती राजलता पंवार रही।

हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता

दिनांक 24 सितंबर 2024 को हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी सुश्री रश्मि यादव ने हिंदी में कुछ अनुच्छेद पढ़कर सुनाए जिसे प्रतिभागियों ने सुनकर लिखा। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर आशुलिपिक ग्रेड-I सुश्री स्वाति रानी, द्वितीय स्थान पर कार्यकारी सहायक श्री हरीश कुमार एवं तृतीय स्थान पर तकनीकी अधिकारी श्री संदीप कुमार रहे।

लघु पुस्तक मेला एवं कैलीग्राफी प्रदर्शनी का आयोजन

दिनांक 20 सितंबर 2024 को महानिदेशालय में लघु पुस्तक मेला एवं कैलीग्राफी का आयोजन किया गया। पुस्तक मेला में साहित्य अकादमी और राजकमल प्रकाशन को आमंत्रित किया गया। कैलीग्राफी प्रदर्शनी हेतु श्री आयुष को आमंत्रित किया गया। महानिदेशालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पुस्तक मेला एवं कैलीग्राफी प्रदर्शनी में शामिल हुए एवं अपनी पसंद की पुस्तकों एवं कैलीग्राफी की खरीदारी की।

मंचन कार्यक्रम

दिनांक 23 सितंबर 2024 को महानिदेशालय में हिंदी पखवाड़ा के उपलक्ष्य में मंचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया मंचन कार्यक्रम हेतु सुमुख नाट्य समूह को आमंत्रित किया गया। सुमुख नाट्य समूह के कलाकारों द्वारा मुंशी प्रेमचंद की कहानी "पूस की रात" का मंचन किया गया। इस मंचन कार्यक्रम में कलाकारों का अभिनय सराहनीय रहा।

हिंदी कवि सम्मेलन

दिनांक 24 सितंबर 2024 को हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी काव्यपाठ का आयोजन किया गया। काव्यपाठ हेतु कवयित्री मनु वैशाली को आमंत्रित किया गया। इस काव्यपाठ समारोह में प्रधान महानिदेशक, श्री वाल्टे वुन्जामुअन, श्री आलोक झा, अपर महानिदेशक एवं श्री राजीव यादव, प्रधान अपर महानिदेशक अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस काव्यपाठ समारोह में कवयित्री मनु वैशाली एवं अपर निदेशक डॉ. दिनेश कुमार जांगिड महोदय ने अपनी कविताओं से सभी का मन मोह लिया। इस समारोह में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस काव्यपाठ का आनंद लिया।

पुरस्कार वितरण समारोह एवं हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह

महानिदेशालय में दिनांक 27 सितंबर 2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन माननीय महानिदेशक श्री वाल्टे वुन्जामुअन महोदय की अध्यक्षता में किया गया। इस समारोह में अध्यक्ष महोदय ने हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित सभी कार्यक्रमों की सराहना की एवं महानिदेशालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित किया। अध्यक्ष महोदय ने भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का निर्देश दिया। इस समारोह में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रशस्ति पत्र दिया गया। साथ ही साथ सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने तथा अधिकारियों द्वारा हिंदी में डिक्टेशन देने के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के विजेताओं को भी प्रशस्ति पत्र दिया गया। समापन समारोह कार्यक्रम का संचालन तकनीकी अधिकारी श्री अमर नाथ प्रसाद एवं कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी सुश्री रश्मि यादव द्वारा किया गया।

'स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम का आयोजन

मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत द्वारा दिनांक 17-09-2024 से 02-10-2024 तक 'स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम का आयोजन तिगरी कैंप, संगम विहार, नई दिल्ली में किया गया।

इस दौरान तिगरी कैम्प, संगम विहार में श्रमदान के द्वारा गहन सफाई अभियान चलाया गया जिसमें इस महानिदेशालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। तिगरी कैंप के निवासियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए इस महानिदेशालय द्वारा एक नुक्कड़ नाटक का भी आयोजन करवाया गया। तिगरी कैंप की महिलाओं एवं कार्यालय के आउटसोर्स स्टाफ-कर्मियों को स्वच्छता किट भी वितरित किया गये। इसी कड़ी में द्वारका में विभागीय आवासीय कॉलोनी 'सिट्रा हाइट्स' में सौन्दर्यीकरण के कार्य किए गए।

स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 16-01-2025 से 31-01-2025 तक किया गया।

इस दौरान कार्यालय में स्वच्छता अभियान चलाया गया और कार्यालय की गहन साफ़ सफाई की गयी। माननीय प्रधान महानिदेशक श्री वाल्टे वुन्जामुअन द्वारा वृक्षारोपण किया गया। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलवाई

गयी। कार्यालय परिसर में स्वच्छ भारत मिशन के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा एक रैली निकाली गयी। वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा कार्यालय का स्वच्छता-निरीक्षण भी किया गया।

जीएसटी दिवस से पूर्व विभिन्न गतिविधियों का आयोजन

मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत में जीएसटी दिवस से पूर्व की गतिविधियों के तहत दिनांक 15-05-2025 से 31-05-2025 तक विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गयी।

श्री विक्रम सिंह, अपर सहायक निदेशक एवं श्री नवनीत कठैत, कर सहायक ने फिट इंडिया अभियान के तहत साइकिल मैराथन में भाग लिया। साथ ही महानिदेशालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा साइकिल रैली का आयोजन भी स्थानीय पुष्प विहार पार्क में किया गया, जिसमें इस कार्यालय के सदस्यों ने भाग लिया।

जीएसटी पर आम-जन को जागरूक करने के लिए साकेत के सिलेक्ट सिटी वॉक मॉल में एक नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। इस नाटक के द्वारा आम जन को जीएसटी की आवश्यकता एवं उपयोगिता के विषय में बताया गया। इस अवसर पर प्रधान महानिदेशक वाल्टे वुन्जामुअन, अपर महानिदेशक श्रीमति मीनू कुमार सहित सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

महानिदेशालय में कार्यरत स्टाफ के बच्चों के लिए एक कला प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले बच्चों को अपर महानिदेशक श्रीमती मीनू कुमार द्वारा पुरस्कार दिया गया और भाग लेने वाले अन्य बच्चों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

महिला दिवस 2025 पर कार्यक्रम का आयोजन

मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने हेतु दिनांक 10-03-2025 को महिला दिवस का आयोजन किया गया। इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. रश्मि श्रिया, जो एमएएसएसएच (MASSH) सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में प्रसूति विज्ञानी (Obstetrician) एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं, को आमंत्रित किया गया। डॉ. रश्मि श्रिया ने महानिदेशालय की सभी महिला कार्मिकों को महिलाओं को होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं से अवगत करवाया एवं उनसे बचने के उपाय भी बताए ।

कार्यक्रम के अंत में उप निदेशक श्रीमती कनिका शर्मा महोदया द्वारा डॉ. रश्मि श्रिया को प्रशस्ति-पत्र एवं उपहार दिया गया। इसके साथ ही उप निदेशक महोदया द्वारा कार्यालय की सभी महिला अधिकारियों को महिला दिवस के अवसर पर उपहार भी वितरित किए गए।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

1. अक्टूबर-दिसम्बर 2024 तिमाही की हिंदी तकनीकी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 13-11-2024 एवं 14-11-2024 को किया गया जिसमें इस महानिदेशालय के अपर निदेशक डॉ. दिनेश कुमार जांगिड महोदय द्वारा राजभाषा हिंदी से संबंधित संवैधानिक प्रावधान, विभिन्न नियम एवं अधिनियम तथा हिंदी अनुवाद से संबंधित ई-टूल्स पर प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में कुल 43 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

2. जनवरी-मार्च 2025 तिमाही की कार्यशाला का आयोजन दिनांक 26-03-2025 को किया गया जिसमें इस महानिदेशालय के अपर निदेशक डॉ. दिनेश कुमार जांगिड महोदय द्वारा हिंदी अनुवाद से संबंधित ई-टूल्स का प्रशिक्षण दिया गया जिसमें कुल 29 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में अपर निदेशक महोदय द्वारा "कौन बनेगा करोड़पति" की तर्ज पर हिंदी ज्ञान से संबंधित एक 'प्रश्न-मंच' का आयोजन भी किया गया। इसमें टीवी स्क्रीन पर केबीसी की तरह हिंदी से संबंधित प्रश्न पूछे गए। इसमें कुल सात टीमों, हायरिंग, निर्माण, प्रशासन, कल्याण, आर. एंड एम., भूमि एवं आर. बी.ए. ने भाग लिया। इस प्रश्न-मंच प्रतियोगिता में 'टीम हायरिंग' विजेता रही जिसमें संयुक्त निदेशक डॉ. गणेश पोटे, सहायक निदेशक श्री लाजपत राय एवं कर सहायक श्री रवीन्द्र प्रतिभागी थे। इस प्रश्न-मंच प्रतियोगिता में अपर निदेशक श्री मनोज कुमार की 'निर्माण टीम' उप-विजेता रही। आर. बी. ए. एवं आर. एंड एम. की टीमें रनर अप रहीं।

3. अप्रैल-जून, 2025 तिमाही की हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 17-06-2025 को किया गया जिसमें इस महानिदेशालय के अपर निदेशक डॉ. दिनेश कुमार जांगिड महोदय द्वारा राजभाषा हिंदी से संबंधित संवैधानिक प्रावधान एवं हिंदी अनुवाद से संबंधित ई-टूल्स पर प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में कुल 19 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

ई-सूचना पट्ट का उद्घाटन

मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत में प्रतिदिन हिंदी के सुविचार एवं कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले अंग्रेजी शब्दों का हिंदी रूपांतर लिखने हेतु 'ई-सूचना पट्ट' का उद्घाटन प्रधान महानिदेशक श्री वाल्टे वुन्जामुअन महोदय एवं अपर महानिदेशक श्रीमती मीनू कुमार महोदया द्वारा दिनांक 06-08-2025 को किया गया। इस अवसर पर अपर निदेशक श्री मनोज कुमार, अपर निदेशक श्री अमित कुमार मिश्रा, अपर निदेशक डॉ. दिनेश कुमार जांगिड, संयुक्त निदेशक डॉ. गणेश पोटे एवं सभी सहायक निदेशकों सहित इस महानिदेशालय के तमाम अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

श्री महीप अधिकारी बने सर्वश्रेष्ठ फुटबॉल खिलाड़ी

श्री महीप अधिकारी वर्तमान में मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत में एक हवलदार के रूप में तैनात है। श्री महीप एक बेहतरीन फुटबॉल खिलाड़ी हैं और 'गोल हंटर्ज' टीम का हिस्सा हैं। उत्तराखंड के रुद्रपुर में 'राष्ट्रीय फुटसल क्लब चैंपियनशिप प्रतियोगिता' अभी हाल ही में आयोजित हुई थी जिसमें श्री महीप की टीम ने भी भाग लिया।

यह एक राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता है, जिसमें पूरे भारत की टीमें भाग लेती हैं। आठ दिनों तक चली प्रतियोगिता में भाग लेने के बाद, दिल्ली का प्रतिनिधित्व करने वाली उनकी टीम गोल हंटर्ज़ प्रतियोगिता की विजेता बनी और श्री महीप अधिकारी को प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार दिया गया। उन्होंने क्वार्टर फाइनल और फाइनल में हैट्रिक सहित पाँच मैचों में 9 गोल किए।

श्री बराय की टीम बनी 21 वर्ष बाद फुटबॉल विजेता

श्री सायक बराय वर्तमान में मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत में कर सहायक के रूप में पदस्थापित हैं। श्री सायक दिल्ली सचिवालय फुटबॉल टीम का हिस्सा हैं और उसके एक उभरते हुए खिलाड़ी हैं।

हाल ही में गोवा में आयोजित भारतीय सिविल सेवा फुटबॉल टूर्नामेंट में इनकी टीम ने भी भाग लिया एवं बहुत ही शानदार प्रदर्शन करते हुए दिल्ली सचिवालय टीम ने 21 वर्षों के बाद जीत का ताज अपने नाम किया। श्री सायक इस जीत के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर रहे।

भारत की एक सशक्त भुजा- उत्तर-पूर्वी राज्य

वाल्टे वुन्जामुअन
प्रधान महानिदेशक

भारत की विविधता केवल उसकी भाषा, धर्म और संस्कृति में ही नहीं बल्कि उसकी भौगोलिक संरचना में भी झलकती है। उत्तर-पूर्व भारत, जिसे सामान्यतः "सेवन सिस्टर्स स्टेट्स" कहा जाता है, इस विविधता का सबसे जीवंत उदाहरण है। इन राज्यों में अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड और त्रिपुरा शामिल है। यहां पर पर्वतीय परिदृश्य, नदी घाटियाँ, झीलें, जलप्रपात, घने वन और अद्वितीय जनजातीय संस्कृति का संगम मिलता है।

उत्तर-पूर्व भारत का महत्व केवल भौगोलिक या सांस्कृतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामरिक दृष्टि से भी है क्योंकि यह क्षेत्र भूटान, चीन, म्यांमार और बांग्लादेश की सीमाओं से जुड़ा हुआ है। यहाँ की प्राकृतिक संपदा, पर्यटन स्थलों और जैव विविधता ने इसे विश्व मानचित्र पर विशेष स्थान दिलाया है।

'सेवन सिस्टर्स' के हरेक राज्य की अपनी एक अलग पहचान है और अपनी-अपनी विशेषताएं हैं। एक एक करके हम सभी सात राज्यों के बारे में संक्षिप्त रूप से यहां चर्चा करेंगे-

अरुणाचल प्रदेश

भौगोलिक विशेषताएँ- अरुणाचल प्रदेश को "भारत का उदयाचल प्रदेश" कहा जाता है क्योंकि सूर्य की पहली किरण भारत में यहाँ पड़ती है। राज्य का अधिकांश भाग हिमालय की पर्वतीय शृंखलाओं से आच्छादित है। सियांग, सुबनसिरी, कामेंग और लोअर दिबांग जैसी नदियाँ इसकी भू-आकृति को आकार देती हैं।

सांस्कृतिक विशेषताएँ- अरुणाचल में 26 प्रमुख जनजातियाँ और 100 से अधिक उप-जनजातियाँ निवास करती हैं। मोनपा, अपातानी और न्यिशी जनजातियाँ विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। यहाँ के त्योहार जैसे- लोसार, सोलुंग, न्योकुम युलो और सागा दाव आदि जनजीवन में उत्साह भरते हैं।

प्राकृतिक एवं पर्यटन स्थल- तवांग मठ एक बहुत ही प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है जो भारत का सबसे बड़ा बौद्ध मठ है। जीरो घाटी धान के खेतों एवं अपातानी संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। यहां देश का एक प्रसिद्ध उद्यान - नामदाफा राष्ट्रीय उद्यान भी स्थित है जो बाघ, हिम तेंदुआ और दुर्लभ पक्षियों का घर है। सेला पास व बुमला पास बर्फीले पहाड़ और साहसिक पर्यटन के केंद्र हैं और सदा पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

असम

भौगोलिक विशेषताएँ- असम को उत्तर-पूर्व का प्रवेश द्वार कहा जाता है। यह राज्य ब्रह्मपुत्र और बराक नदी की उपजाऊ घाटियों पर स्थित है। यहाँ चाय बागान और तेल-कोयला संसाधनों की भरमार है।

सांस्कृतिक विशेषताएँ- असमिया समाज अपनी संगीत, नृत्य और साहित्यिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। "बीहू" त्योहार असम की सांस्कृतिक पहचान है। अहोम वंश की ऐतिहासिक धरोहर यहाँ की भूमि पर गहराई से अंकित है।

प्राकृतिक एवं पर्यटन स्थल- काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान एक विश्व प्रसिद्ध उद्यान है जो एक सींग वाले गैंडे का प्राकृतिक आश्रय स्थल है और इसे देखने पूरे विश्व से दूर-दूर के वन्यजीव प्रेमी यहां आते हैं। मानस राष्ट्रीय उद्यान भी इसी राज्य में स्थित है जो यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल है और बाघ, हाथी, गैंडा और कछुआ की कई प्रजातियों के कारण एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय उद्यान है।

असम का एक बहुत ही सुंदर पर्यटन स्थल है माजुली द्वीप जो विश्व का सबसे बड़ा 'नदी-द्वीप' है। यहां देश-विदेश के हजारों पर्यटक हर साल आते हैं और प्राकृतिक छटाओं का आनंद लेते हैं। असम में सिवसागर भी स्थित है जो असम के प्रसिद्ध 'अहोम साम्राज्य' का ऐतिहासिक स्मारक भी है।

मणिपुर

भौगोलिक विशेषताएँ- मणिपुर को "भारत का आभूषण" कहा जाता है। यह राज्य घाटियों और पहाड़ियों से घिरा है। लोकटक झील यहाँ की सबसे प्रमुख भौगोलिक विशेषता है।

सांस्कृतिक विशेषताएँ- मणिपुरी नृत्य भारत की शास्त्रीय नृत्य शैलियों में से एक है। यहाँ वैष्णव परंपरा और स्थानीय संस्कृति का अद्भुत संगम है। यहाँ की महिलाएँ हथकरघा और हस्तशिल्प में निपुण हैं।

प्राकृतिक एवं पर्यटन स्थल- लोकटक झील मणिपुर की सबसे बड़े मीठे पानी की झील है जो तैरते द्वीपों के लिए प्रसिद्ध है जिन्हें 'फुमदी' कहा जाता है। यहीं पर केइबुल लमजाओ राष्ट्रीय उद्यान भी स्थित है जो विश्व का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान माना जाता है। यहां दुर्लभ सांगाई हिरण पाए जाते हैं। यह झील समस्त उत्तर-पूर्व के लिए पारिस्थितिकी एवं पर्यावरणीय रूप से बहुत महत्वपूर्ण है।

कांगला किला मणिपुर का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक धरोहर स्थल है। यहां की राजधानी इम्फाल सांस्कृतिक और प्राकृतिक रूप से बहुत ही समृद्ध है।

मेघालय

भौगोलिक विशेषताएँ- मेघालय का शाब्दिक अर्थ है "बादलों का घर"। यह राज्य उच्च वर्षा, जलप्रपात और गुफाओं के लिए प्रसिद्ध है। खासी, गारो और जयंतिया पहाड़ियाँ इसकी पहचान हैं।

सांस्कृतिक विशेषताएँ- यहाँ मातृसत्तात्मक समाज व्यवस्था है। महिलाएँ परिवार की मुखिया होती हैं। लोकगीत, नृत्य और पर्व (जैसे बेहदीनखलम, वांगला) यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर हैं।

प्राकृतिक एवं पर्यटन स्थल- चेरापूंजी और मौसिनराम जैसे स्थल पूरे विश्व में सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्रों के रूप में विख्यात है। यहां आसपास बहुत सारे प्रसिद्ध झरने भी हैं जो हरेक अपनी-अपनी कहानी कहता हुआ प्रतीत होता है। यहां की राजधानी शिलांग को "पूर्व का स्कॉटलैंड" कहा जाता है। शिलांग से कुछ ही दूर पर जयंतिया पहाड़ियों में नोंगजिरोंग नामक जगह स्थित है जो सूर्योदय के समय बादलों के दर्शन के लिए विश्वविख्यात है।

यहां भारत बांग्लादेश की सीमा बनाने वाली एक प्रसिद्ध नदी 'उम्गोट नदी' है जिसे आम पर्यटक डॉउकी नदी के नाम से भी जानते हैं और इसे भारत की सबसे 'स्वच्छ एवं पारदर्शी' नदी का दर्जा प्राप्त है। इसके पास ही मेघालय का सबसे स्वच्छ गांव एवं लिविंग रूट ब्रिज भी स्थित है जो पर्यटकों के आकर्षण का एक केन्द्र है।

मिज़ोरम

भौगोलिक विशेषताएँ- मिज़ोरम का अधिकांश भाग पहाड़ियों से आच्छादित है। यहाँ बाँस की प्रचुरता है। यह म्यांमार एवं बांग्लादेश के साथ सीमा बनाता है।

सांस्कृतिक विशेषताएँ- मिज़ो समाज सामुदायिक और आधुनिक ईसाई प्रभाव से परिचालित है। यहाँ "चपचार कुट" और "मिम कुट" जैसे त्योहार मनाए जाते हैं। चेराव (बांस नृत्य) इसकी पहचान है।

प्राकृतिक एवं पर्यटन स्थल- ऐज़वाल यहां की राजधानी है जो चर्च और बाजारों के लिए प्रसिद्ध है। फवंगलपुई (ब्लू माउंटेन) यहां की सबसे ऊँची चोटी है। डंपा टाइगर रिजर्व वन्यजीव प्रेमियों का आकर्षण है। चम्पाई पहाड़ी दृश्य बहुत ही मनोरम छटा वाले हैं।

नागालैंड

भौगोलिक विशेषताएँ- नागालैंड एक छोटा सा पहाड़ी राज्य है जो म्यांमार की सीमाओं से सटा हुआ है। यहाँ पर्वत, वादियां और घने वन हैं।

सांस्कृतिक विशेषताएँ- यहाँ 16 प्रमुख जनजातियाँ निवास करती हैं। प्रत्येक जनजाति की अपनी भाषा और नृत्य शैली है। 'हॉर्नबिल फेस्टिवल' नागालैंड की सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक है।

प्राकृतिक एवं पर्यटन स्थल- कोहिमा यहां की राजधानी है जो द्वितीय विश्व युद्ध स्मारक है। यहां का प्रसिद्ध पर्यटन स्थल 'जुकू को घाटी' है जो फूलों और हरी घास से ढकी हुई एक सुंदर घाटी है। मोकोकचुंग आओ जनजाति का सांस्कृतिक केंद्र है। किसामा इस राज्य के सबसे प्रसिद्ध पर्व हॉर्नबिल महोत्सव का आयोजन स्थल है।

त्रिपुरा

भौगोलिक विशेषताएँ- त्रिपुरा बांग्लादेश से तीन ओर घिरा हुआ है। यहाँ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ और घाटियाँ हैं।

सांस्कृतिक विशेषताएँ- त्रिपुरा में बंगाली और जनजातीय संस्कृति का अनूठा संगम है। यहाँ के त्योहारों में दुर्गा पूजा, खारची पूजा और गारिया उत्सव प्रमुख हैं।

प्राकृतिक एवं पर्यटन स्थल- त्रिपुरा का 'उज्जयंत महल शाही' वास्तुकला का अद्‌भुत उदाहरण है। नीरमहल एक बहुत ही सुंदर राजमहल है जो झील के बीच स्थित है। त्रिपुरा सुंदरी मंदिर देश के प्रसिद्ध शक्तिपीठों में से एक है। सेपाहिजाला वन्यजीव अभयारण्य जैव विविधता का प्रमुख केंद्र है।

निष्कर्ष- उत्तर-पूर्व भारत के सात राज्य अपनी भौगोलिक विविधता, सांस्कृतिक धरोहर और प्राकृतिक संपदा के कारण भारतीय उपमहाद्वीप में अद्वितीय स्थान रखते हैं। यहाँ की जनजातीय परंपराएँ, त्योहार और पर्यटन स्थल भारतीय संस्कृति की समृद्धि को और बढ़ाते हैं। यह क्षेत्र वास्तव में भारत की "एकता में विविधता" की परिभाषा को साकार करता है। यह हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि उत्तर-पूर्व भारत की एक बलिष्ठ भुजा है।

महिला सशक्तिकरण–दशा और दिशा

मीनू कुमार
अपर महानिदेशक

भारत जैसे विशाल और विविधताओं से भरे देश में महिला सशक्तिकरण एक अत्यंत महत्वपूर्ण और ज्वलंत विषय है। युगों से महिलाओं को समाज में एक सीमित भूमिका में देखा गया है, परंतु बदलते समय के साथ उनकी भूमिका में परिवर्तन आया है। आज महिला केवल घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं रही, वह शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, व्यापार और रक्षा जैसे क्षेत्रों में भी अपने योगदान से समाज को दिशा दे रही हैं।

महिला सशक्तिकरण का सामान्य अर्थ है महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक दृष्टि से सक्षम बनाना ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और अपने जीवन के निर्णय स्वयं ले सकें। इसका उद्देश्य महिलाओं को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और संभावनाओं के प्रति जागरूक करना है ताकि वे समाज में समानता के साथ जीवन जी सकें।

महिला सशक्तिकरण की वर्तमान दशा–

आज भारत में महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, लेकिन यह विकास असमान रूप से फैला है। शहरी क्षेत्रों में जहां महिलाएं उच्च शिक्षा, व्यवसाय और प्रशासन में अग्रसर हैं, वहीं ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में अब भी बाल विवाह, घरेलू हिंसा, अशिक्षा और लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएं विद्यमान हैं।

सकारात्मक संकेत

महिला साक्षरता दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2021 की जनगणना के अनुसार, महिला साक्षरता लगभग 70 प्रतिशत तक पहुँच चुकी है। महिलाएं अब कॉर्पोरेट, स्टार्टअप्स, रक्षा, विज्ञान और तकनीक में नेतृत्वकारी भूमिकाएँ निभा रही हैं। पंचायत राज संस्थाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण से लाखों महिलाएं नेतृत्व की भूमिका में आई हैं। पी.वी. सिंधु, मिताली राज, मैरी कॉम जैसी खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का नाम रोशन कर चुकी हैं।

चुनौतियाँ–

महिला सशक्तिकरण का शत-प्रतिशत लक्ष्य पाने के लिए अभी भी कई चुनौतियां हमारे सामने खड़ी हैं। भारत एक ग्रामीण जनसंख्या प्रधान देश है और दूर दराज के इलाकों में महिला समानता अभी भी दूर की कौड़ी नजर आती है।

वेतन, पदोन्नति और अवसरों में अब भी भेदभाव मौजूद है। महिलाओं के खिलाफ अपराध की दर चिंताजनक है। महिलाओं और उसमें भी विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी है। डिजिटल डिवाइड भी बहुत है और ग्रामीण महिलाओं की डिजिटल पहुंच अब भी सीमित है।

महिला सशक्तिकरण के प्रमुख आयाम

शैक्षिक सशक्तिकरण- शिक्षा न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि आत्मविश्वास, जागरूकता और निर्णय क्षमता भी बढ़ाती है। जब महिलाएं शिक्षित होती हैं, तो वे न केवल अपने जीवन को सुधारती हैं, बल्कि अपने परिवार और समाज को भी सकारात्मक दिशा देती हैं। विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे-बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, सर्व शिक्षा अभियान, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय आदि प्रयासों के माध्यम से महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया है।

आर्थिक सशक्तिकरण-आर्थिक आत्मनिर्भरता महिला सशक्तिकरण की रीढ़ है। जब महिलाएं कमाने लगती हैं, तो वे आत्मनिर्भर बनती हैं और समाज में उनका सम्मान भी बढ़ता है।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्वयं सहायता समूह, दीनदयाल अंत्योदय योजना आदि योजनाओं के माध्यम से लाखों महिलाओं को स्वरोजगार और व्यवसाय में प्रोत्साहन मिला है।

सामाजिक सशक्तिकरण- समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए सामाजिक बुराइयों जैसे दहेज, बाल विवाह, स्त्री भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा का उन्मूलन आवश्यक है। जन जागरूकता अभियानों जैसे लाड़ली योजना, सखी वन स्टॉप सेंटर, महिला हेल्पलाइन नं 181 से महिलाओं को सुरक्षा और परामर्श सेवा मिल रही है।

राजनीतिक सशक्तिकरण- राजनीति में महिलाओं की भागीदारी लोकतंत्र की मजबूती का संकेत है। पंचायत राज अधिनियम में महिलाओं को 33% आरक्षण ने उन्हें राजनीतिक रूप से सशक्त बनाया है। इसके अलावा, संसद और विधानसभाओं में भी महिलाओं की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है।

महिला सशक्तिकरण की दिशा-

अब सवाल यह है कि महिला सशक्तिकरण किस दिशा में बढ़ रहा है और भविष्य में इसे कैसे और प्रभावी बनाया जा सकता है।

डिजिटल सशक्तिकरण- डिजिटल इंडिया के युग में महिलाओं को डिजिटल साक्षर बनाना बेहद आवश्यक है। इंटरनेट, मोबाइल एप्लिकेशन, डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को नए अवसरों तक पहुंच मिल सकती है।

स्किल डेवेलपमेंट (कौशल विकास)- महिलाओं को पारंपरिक कामों के साथ-साथ नई तकनीकी और व्यावसायिक कौशल में प्रशिक्षित करना समय की मांग है। इससे उन्हें बेहतर रोजगार और उद्यमिता के अवसर मिल सकते हैं।

कानूनों का कड़ाई से पालन- महिला सुरक्षा के लिए बनाए गए कानूनों का सही ढंग से क्रियान्वयन होना चाहिए। साथ ही, महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना आवश्यक है।

मानसिकता में बदलाव- सबसे महत्वपूर्ण बदलाव लोगों की सोच में होना चाहिए। महिलाओं को एक समान साथी, निर्णयकर्ता और नेता के रूप में स्वीकार करना होगा। शिक्षा, मीडिया और साहित्य को इस बदलाव में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

निष्कर्ष-

आज हम अगर हम विश्व परिदृश्य पर नजर डालें तो पाएंगे कि जहां-जहां महिलाएं सक्षम एवं सशक्त हैं, वे राष्ट्र आज विकसित हैं और तरक्की के नये सोपानों को छू रहे हैं। एक सक्षम एवं सशक्त समाज के लिए उसकी आधा आबादी का सशक्त होना आवश्यक है जो इस समाज की न केवल जननी है बल्कि पालक भी है। यह बात हम सबको सदैव याद रखनी चाहिए कि-

एक सशक्त नारी, एक सशक्त राष्ट्र की आधारशिला है।

मानव संसाधन महानिदेशालय की कल्याणकारी योजनाएं

सर्वे भवन्तु सुखिनः

डॉ. दिनेश कुमार जांगिड
अपर निदेशक

भारतीय परंपरा एवं संस्कृति में एक श्लोक है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिदुखभाग्भवेत!

तैत्तिरीय उपनिषद् का यह श्लोक भारतीय समावेशी संस्कृति का सार है जो सबके कल्याण की कामना करता है।

इसी भावना को आत्मसात करते हुए केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड, नई दिल्ली ने भी अपने कर्मचारियों एवं उनके परिवारों के कल्याण के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं संचालित कर रखी है। सीबीआईसी का साकेत स्थित मानव संसाधन विकास महानिदेशालय इसके लिए नोडल अभिकरण है जिसका कल्याण मंडल सभी कल्याणकारी योजनाओं के लिए आवश्यक धन का प्रबंध करता है।

केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क एवं सीमा-शुल्क कल्याण कोष

भारत गणराज्य के राष्ट्रपति महोदय की अनुमति से 1987 में इस कोष की स्थापना की गई। इस कोष का मुख्य उद्देश्य सीबीआईसी के समस्त स्टाफ एवं उनके परिजनों के कल्याण के लिए यथोचित धनराशि की व्यवस्था करना है। इस कोष में सीबीआईसी के विभिन्न कार्यालयों में जब्त माल की नीलामी अथवा उसके विभिन्न प्रकार के शुल्क से प्राप्त राशि का लगभग 5 प्रतिशत धन प्रदान किया जाता है। यही धन विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं हेतु खर्च किया जाता है। कर्मचारी की अकाल मृत्यु पर परिवार की सहायता, चिकित्सा हेतु सहायता, कार्यालय में शिशु-गृह, पाक-शाला, व्यायामशाला आदि हेतु आर्थिक सहायता, विश्राम गृह हेतु सहायता, खेलों में भाग लेने एवं पदक जीतने पर आर्थिक सहायता जैसी कई कल्याणकारी योजनाएं इसी कोष के द्वारा संचालित की जाती है।

विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं-

मानव संसाधन विकास महानिदेशालय के कल्याण मंडल द्वारा कई योजनाओं को संचालन किया जा रहा है। इनमें से कुछ प्रमुख योजनाओं की चर्चा यहां पर करेंगे।

चिकित्सा खर्च हेतु वित्तीय सहायता-

इस योजना के अंतर्गत सीबीआईसी के सभी कार्मिकों को चिकित्सा कार्य में खर्च राशि में सहयोग दिया जाता है। कोई कार्मिक जब चिकित्सा खर्च हेतु सीजीएचएस के तहत अपना दावा प्रस्तुत करता है तो कई चिकित्सा मदों पर सीजीएचएस द्वारा उसे पूर्ण भुगतान नहीं किया जाता। ऐसी स्थिति में भुगतान नहीं की गई राशि के लिए संबंधित कार्मिक इस योजना के तहत उचित माध्यम से आवेदन कर सकता है। संबंधित कार्यालय के प्रधान के माध्यम से एक कमेटी से अनुमोदित करवा कर यह आवेदन मानव संसाधन विकास महानिदेशालय को भेजा जा सकता है। नियमानुसार स्वीकृत होने पर आवेदक को अनुमोदित राशि का चेक जारी कर दिया जाता है। यह योजना सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए उपलब्ध नहीं है। सेवाकालीन कार्मिक के लिए राशि पर कोई

पाबंदी नहीं है लेकिन बच्चों एवं आश्रित पति-पत्नी के लिए अभी 7.5 लाख रूपये तक की अधिकतम सीमा निर्धारित है। इस राशि को शीघ्र ही दुगुनी करने और इसमें आश्रित अभिभावकों भी जोड़ना प्रस्तावित है।

मृत्युपरांत अनुग्रह-राशि-

यदि किसी कार्मिक की असामयिक मृत्यु सेवाकाल के दौरान हो जाती है तो उसके परिजनों को अनुग्रह-राशि के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना के भी कई उपभाग हैं। सामान्य मृत्यु पर 5 लाख, निवारक गतिविधियों के दौरान मृत्यु पर 25 लाख, किसी दुर्घटना अथवा हिंसा की वारदात में मृत्यु होने पर 15 लाख, स्थायी विकलांघता हो जाने पर 15 लाख, कोविड महामारी के दौरान मृत्यु पर 7 लाख रूपयों का आर्थिक अनुदान परिवार को प्रदान किया जाता है। यह अनुग्रह-राशि अन्य किसी भी प्रकार की सहायता के अलावा प्रदान की जाती है। इसके लिए आवेदन उसी कार्यालय के माध्यम से आता है जहां कार्मिक मृत्यु के दौरान पदस्थापित था। मृतक के परिजनों को कार्मिक की मृत्यु के पांच वर्ष के अंदर ही आवेदन करना चाहिए। इस योजना के तहत मिलने वाली राशि को भी बढाया जाना प्रस्तावित है।

खेलों में भाग लेने एवं नागरिक पुरस्कार एवं खेल मेडल जीतने पर नकद राशि-

विभिन्न नागरिक पुरस्कार जैसे अर्जुन पुरस्कार, द्रोणाचार्य पुरस्कार आदि प्राप्त करने अथवा किसी भी ख्यातनाम खेल प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने पर कल्याण कोष द्वारा 1 लाख से लेकर 75 लाख रूपये तक का आर्थिक प्रोत्साहन दिया जाता है। साथ ही विभिन्न प्रकार के अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय खेल आयोजनों में भाग लेने के लिए भी आर्थिक सहायता का प्रावधान इस कोष में किया गया है। यह आर्थिक पुरस्कार व्यक्तिगत स्तर पर और सामूहिक स्तर पर भी दिये जाते हैं। साथ ही विभिन्न खेलों के कोच को भी यह पुरस्कार दिया जाता है।

साहसिक खेलों में भाग लेने हेतु आर्थिक प्रोत्साहन-

देश में विभिन्न साहसिक खेलों जैसे रिवर राफ्टिंग, पैरा-साइक्लिंग, पैरा-ग्लाईडिंग, ट्रैकिंग, हॉट एयर बैलूनिंग आदि में भाग लेने के लिए आर्थिक सहायता दी जाती है। इसके लिए आने जाने का खर्च एवं बीमा भुगतान भी किया जाता है। आर्थिक सहायता की अधिकतम राशि 2.5 लाख रूपये तक है और इसके अतिरिक्त एक लाख तक का बीमा एवं आने जाने के खर्च का भी प्रावधान है। साथ ही विशेष आकस्मिक अवकाश का भी प्रावधान है। देश में कई अधिकृत साहसिक खेल संस्थान हैं जहां पर इन साहसिक खेलों में भाग लिया जा सकता है।

कार्यालयों में शिशु-गृहों हेतु आर्थिक सहायता-

आजकल सरकारी कार्यालयों में ऐसे परिवार के लोग भी कार्य करते हैं जिसमें पति-पत्नी दोनों नौकरीपेशा हैं और घर में अन्य कोई परिजन शिशु देखभाल के लिए नहीं है। ऐसे में महिला कर्मचारियों को अपने साथ ही बच्चों को भी कार्यालयों में लाना पड़ता है। इसके लिए बच्चों के लिए शिशु-गृह बनाने का भी इस कोष में प्रावधान है। किसी भी कार्यालय से आवेदन आने और उसे नियमानुसार पाने पर पांच लाख रूपये तक के आर्थिक अनुदान का प्रावधान इस कोष के माध्यम से किया गया है।

कार्यालयों एवं आवासीय स्थलों पर व्यायाम शाला, खेल परिसर आदि हेतु सहायता-

कल्याण कोष के माध्यम से कार्मिकों के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखा जाता है। यदि कोई आयुक्तालय या निदेशालय अपने कार्यालय में व्यायामशाला खोलना चाहे अथवा आवासीय कॉलोनियों में व्यायाम-शाला अथवा खेल परिसर का निर्माण करना चाहे

तो उसके लिए भी आर्थिक सहायता का प्रावधान है। व्यायामशाला के लिए आवेदन करने पर अधिकतम 12 लाख रूपये के उपकरण खरीदने हेतु राशि कल्याण कोष द्वारा स्वीकृत की जा सकती है। इसके लिए एक संचालन समिति का गठन अनिवार्य है और कल्याण कोष के दिशा-निर्देशों का पालन आवश्यक है।

भोजन-शाला अथवा लघु-रसोई घर हेतु आर्थिक सहायता-

कार्यालयों में कार्मिकों की संख्या के आधार पर भोजन-शाला अथवा लघु-रसोई हेतु आर्थिक सहायता का प्रावधान भी कल्याण कोष के माध्यम से किया जाता है। इसके लिए 2 लाख से लेकर 15 लाख तक की आर्थिक सहायता का प्रावधान है जो कि कार्मिकों की संख्या पर निर्भर करता है। साथ ही पुराने रसोईघरों के नवीनीकरण के लिए भी एक लाख से साढ़े सात लाख तक की राशि का प्रावधान है।

अतिथि गृह निर्माण अथवा नवीनीकरण हेतु आर्थिक सहायता-

कल्याण कोष द्वारा कार्यालय परिसर अथवा आवासीय परिसरों में अतिथि गृहों के निर्माण अथवा उनके नवीनीकरण हेतु भी आर्थिक सहायता का प्रावधान है। इसके लिए प्रति कक्ष तीन लाख चालीस हजार तक की राशि का प्रावधान है। साथ ही रसोईघर के लिए एक लाख साठ हजार की राशि दी जा सकती है।

ट्रांजिट हॉस्टल/अस्थायी निवास व्यवस्था हेतु आर्थिक सहायता-

ट्रांजिट निवास हेतु हॉस्टल बनाने के लिए भी आर्थिक सहायता का प्रावधान है। जो कार्मिक किसी अन्य जगह पर स्थानांतरित होकर जाते हैं उनके लिए यह प्रावधान किया गया है ताकि स्थायी आवास मिलने तक उनके लिए रहने की कोई समस्या ना हो। इसके लिए एक रूम वाले हॉस्टल के लिए एक लाख नब्बे हजार एवं दो कक्ष वाले हॉस्टल के लिए दो लाख नब्बे हजार की आर्थिक सहायता दी जाती है जिसमें किचन एवं बाथरूम भी शामिल हैं।

कल्याण योजनाएं दो स्तर पर हैं- व्यक्तिगत स्तर पर एवं सामूहिक स्तर पर। व्यक्तिगत स्तर की कल्याण योजनाओं में आवेदक एक कार्मिक या उसके रिश्तेदार हो सकते हैं। जैसे चिकित्सा सहायता योजना, मृत्युपरांत अनुग्रह राशि, खेल में भाग लेने के लिये सहायता आदि। सामूहिक कल्याण योजनाओं में आवेदक कार्यालय होता है जिसमें सभी के लिये कल्याण योजनाएं शामिल है। जैसे- कैंटीन, अतिथि-गृह, शिशु-गृह आदि।

केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड के कल्याण कोष से संचालित यह योजनाएं अपने आप में अनूठी है जो अन्यत्र कम ही मिलती है। यह कल्याण कोष इस बात का भी द्योतक है कि सीबीआईसी अपने कार्मिकों को अपने परिवार का हिस्सा मानता है और उनके कल्याण हेतु हर-संभव सदैव तत्पर रहता है। सर्वे भवंतु सुखिनः की भावना को यहां चरितार्थ होता हुआ देखा जा सकता है।

इस प्रकार से कल्याण कोष के द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर एवं सामूहिक स्तर पर कार्मिकों के कल्याण हेतु हर संभव सहायता देने के अधिकतम प्रयास किये जाते हैं। सभी कल्याण योजनाओं की विस्तृत जानकारी, आवेदन की शर्तों, चेक-लिस्ट, आवश्यक दस्तावेजों एवं अधिकतम राशि की आधिकारिक जानकारी के लिए मानव संसाधन विकास महानिदेशालय द्वारा प्रकाशित 'कल्याण योजनाओं का संकलन' को ध्यानपूर्वक देखना चाहिए।

पिछले पांच वर्षों में कल्याणकारी योजनाओं पर किया गया व्यय- एक दृष्टि में

क्र	वित्तीय वर्ष	प्रस्तावों की संख्या	वितरित राशि, करोड़ में
1	2020-21	2014	17-76
2	2021-22	2023	27-45
3	2022-23	2670	10-68
4	2023-24	883	11-35
5	2024-25	671	11-32

पिछले वित्तीय वर्ष में विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं पर किया गया व्यय- एक दृष्टि में

क्र	वित्तीय वर्ष	प्रस्तावों की संख्या	वितरित राशि, करोड़ में
1	चिकित्सा खर्च हेतु आर्थिक सहायता	279	2-55
2	मृत्युपरांत अनुग्रह राशि वितरण	134	6-39
3	भोजनशाला हेतु स्थापना/नवीनीकरण	7	0-46
4	व्यायाम शाला स्थापना/नवीनीकरण	1	0-08
5	अतिथि गृह निर्माण/नवीनीकरण	7	1-55
6	शिशु-गृह स्थापना/नवीनीकरण	1	0-03
7	परिवहन व्यवस्था हेतु आर्थिक सहायता	5	0-18
8	चिकित्सा-जांच हेतु सहायता (संवर्ग ख एवं ग)	237	0-04
	कुल योग	671	11-32

इस वर्ष अगस्त 2025 तक विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं हेतु 365 आवेदन स्वीकृत हुए हैं जिनमें अब तक तीन करोड़ से अधिक की धनराशि वितरित की जा चुकी है।

सीबीआईसी के क्षेत्रीय कार्यालयों में बुनियादी ढांचे का विकासः राष्ट्र की आर्थिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ

डॉ. गणेश पोटे
संयुक्त निदेशक

परिचय

भारत की आर्थिक संप्रभुता और वित्तीय स्वास्थ्य को बनाए रखने में केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (CBIC) एक प्रहरी की भूमिका निभाता है। वित्त मंत्रालय के अधीन यह महत्वपूर्ण संगठन वस्तु एवं सेवा कर (GST), सीमा शुल्क और अन्य अप्रत्यक्ष करों के संग्रह के साथ-साथ तस्करी की रोकथाम और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाने जैसे अति महत्वपूर्ण कार्यों का निर्वहन करता है। इस विशाल और जटिल जिम्मेदारी को निभाने वाले सीबीआईसी के अधिकारी और कर्मचारी देश के कोने-कोने में, महानगरों से लेकर सुदूर सीमावर्ती क्षेत्रों तक, इसके क्षेत्रीय कार्यालयों में तैनात हैं। इन परिस्थितियों में, यह समझना अनिवार्य है कि इन क्षेत्रीय कार्यालयों में आधुनिक कार्यालय भवनों और गुणवत्तापूर्ण आवासीय परिसरों का विकास केवल एक सुविधा नहीं, बल्कि एक रणनीतिक आवश्यकता है, जो सीधे तौर पर संगठन की दक्षता, कर्मचारियों के मनोबल और अंततः राष्ट्र की आर्थिक प्रगति को प्रभावित करती है।

आधुनिक कार्यालय भवन-दक्षता और सकारात्मकता का केंद्र

सीबीआईसी के क्षेत्रीय कार्यालय, जिन्हें आयुक्तालय और कस्टम हाउस के रूप में जाना जाता है, संगठन की अग्रिम पंक्ति हैं। यहीं पर नीतियों को लागू किया जाता है, राजस्व एकत्र होता है और करदाताओं से सीधा संवाद होता है। इन कार्यालयों का भौतिक वातावरण उनके प्रदर्शन पर गहरा प्रभाव डालता है।

1. **कार्यकुशलता और उत्पादकता में वृद्धि-** एक आधुनिक कार्यालय केवल ईंट-गारे का ढांचा नहीं होता, बल्कि यह एक कुशल इको-सिस्टम होता है। उचित रूप से डिजाइन किया गया कार्यस्थल, जिसमें पर्याप्त स्थान, प्राकृतिक प्रकाश, और आरामदायक फर्नीचर हो, कर्मचारियों की एकाग्रता और उत्पादकता को बढ़ाता है। आज के डिजिटल युग में, जब सीबीआईसी पूरी तरह से प्रौद्योगिकी-संचालित प्रणाली पर काम कर रहा है, तब कार्यालयों में निर्बाध हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी, सुरक्षित डेटा सेंटर, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग रूम और आधुनिक आईटी उपकरण अनिवार्य हैं। एक पुरानी, जर्जर इमारत में बार-बार बिजली जाना या नेटवर्क फेल होना न केवल काम में बाधा डालता है, बल्कि महत्वपूर्ण राजस्व डेटा के लिए भी खतरा पैदा कर सकता है।

2. **कर्मचारियों के मनोबल पर सकारात्मक प्रभाव** - कार्यस्थल का वातावरण कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य और मनोबल को सीधे प्रभावित करता है। एक स्वच्छ, सुरक्षित, और सुसज्जित कार्यालय कर्मचारियों में अपनेपन और सम्मान की भावना पैदा करता है। जब कर्मचारियों को लगता है कि संगठन उनके आराम और जरूरतों की परवाह करता है, तो वे अधिक प्रेरित और प्रतिबद्ध महसूस करते हैं। इसके विपरीत, एक जीर्ण-शीर्ण, सुविधाओं से रहित कार्यालय निराशा और उदासीनता को जन्म दे सकता है, जिसका असर उनके प्रदर्शन पर पड़ता है।

3. **सार्वजनिक छवि और करदाता सेवा** - सीबीआईसी के कार्यालय वे स्थान हैं जहाँ देश के लाखों व्यापारी और करदाता अपने कर-संबंधी मामलों के लिए आते हैं। एक आधुनिक, सुव्यवस्थित और स्वागत योग्य कार्यालय भवन सरकार और उसके कर प्रशासन की एक पेशेवर और सकारात्मक छवि प्रस्तुत करता है। यह पारदर्शिता और पहुंच को बढ़ावा देता है, जिससे करदाताओं का विश्वास बढ़ता है। आगंतुकों के लिए बैठने की उचित व्यवस्था, स्पष्ट साइनेज और हेल्पडेस्क जैसी सुविधाएं एक सकारात्मक अनुभव प्रदान करती हैं और अनुपालन को प्रोत्साहित करती हैं।

गुणवत्तापूर्ण आवासीय परिसर-एक अनिवार्य सामाजिक सुरक्षा'

जितना महत्वपूर्ण एक आधुनिक कार्यालय है, उतना ही आवश्यक कर्मचारियों के लिए एक सुरक्षित और सम्मानजनक आवासीय परिसर भी है। सीबीआईसी के कई अधिकारियों को देश के दुर्गम और संवेदनशील क्षेत्रों में तैनात किया जाता है, जहाँ उपयुक्त आवास मिलना एक बड़ी चुनौती हो सकती है।

1. बेहतर जीवन स्तर और मानसिक शांति - एक सुरक्षित और अच्छी तरह से बनाया गया सरकारी आवास कर्मचारियों और उनके परिवारों को एक स्थिर वातावरण प्रदान करता है। यह उन्हें किराए के मकान खोजने की अनिश्चितता और वित्तीय बोझ से बचाता है, जिससे वे मानसिक शांति के साथ अपनी पेशेवर जिम्मेदारियों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। जब एक अधिकारी अपने परिवार की सुरक्षा और कल्याण के बारे में निश्चिंत होता है, तो उसकी कार्यक्षमता स्वाभाविक रूप से बढ़ जाती है।

2. दूरस्थ और संवेदनशील तैनाती को प्रोत्साहन - सीमा शुल्क विभाग के कई पद बंदरगाहों, हवाई अड्डों और जमीनी सीमाओं पर स्थित होते हैं, जो अक्सर मुख्य शहरों से दूर होते हैं। इन क्षेत्रों में अच्छी आवासीय सुविधाओं का अभाव अक्सर कर्मचारियों के लिए एक निरुत्साह का कारण बनता है। यदि सरकार इन रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों पर अच्छी गुणवत्ता वाले आवासीय परिसर विकसित करती है, तो यह प्रतिभाशाली अधिकारियों को ऐसी पोस्टिंग स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करेगा, जिससे इन संवेदनशील बिंदुओं पर राष्ट्र की आर्थिक और भौतिक सुरक्षा मजबूत होगी।

3. सत्यनिष्ठा और भ्रष्टाचार पर अंकुश - सरकारी आवास की उपलब्धता अधिकारियों को बाहरी तत्वों के अनुचित प्रभाव और दबाव से बचाने में एक महत्वपूर्ण कारक हो सकती है। जब अधिकारियों को आवास के लिए स्थानीय मकान मालिकों या अन्य निहित स्वार्थों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता, तो उनकी निष्पक्षता और सत्यनिष्ठा को बनाए रखना आसान हो जाता है। यह भ्रष्टाचार के खिलाफ संगठन की लड़ाई को मजबूत करने में एक अप्रत्यक्ष लेकिन प्रभावी कदम है।

सरकारी पहल और भविष्य की राह-

यह संतोष का विषय है कि केंद्र सरकार और सीबीआईसी इस आवश्यकता के प्रति सचेत हैं। पिछले कुछ वर्षों में, बुनियादी ढांचे के विकास पर विशेष जोर दिया गया है। सीबीआईसी के मानव संसाधन विकास महानिदेशालय द्वारा जारी इन्फ्रास्ट्रक्चर पर मैनुअल 2022 एक संरचित और मानकीकृत दृष्टिकोण को दर्शाता है। हालिया रिपोर्टों के अनुसार, पिछले दशक में वित्त मंत्रालय ने सीबीआईसी की विभिन्न कार्यालय और आवासीय भवन परियोजनाओं के लिए लगभग 4600 करोड़ रुपये की वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है।

हरियाणा के रोहतक में नवनिर्मित जीएसटी भवन और दिल्ली के द्वारका में सीबीआईसी अधिकारियों के लिए एक बड़ी आवासीय परियोजना जैसे उदाहरण इस दिशा में सकारात्मक प्रगति के प्रतीक हैं। हालांकि, इस विकास की गति को और तेज करने तथा इसके दायरे को व्यापक बनाने की आवश्यकता है। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि विकास केवल कुछ चुनिंदा महानगरों तक ही सीमित न रहे, बल्कि टियर-2, टियर-3 शहरों और विशेष रूप से सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों तक भी पहुंचे।

इसके अतिरिक्त, नई इमारतों के निर्माण के साथ-साथ मौजूदा पुरानी इमारतों के नियमित रखरखाव और उन्नयन के लिए भी एक मजबूत तंत्र स्थापित करना महत्वपूर्ण है। कई ऐतिहासिक सीमा शुल्क भवन विरासत का हिस्सा हैं, जिन्हें उनकी ऐतिहासिक पहचान को संरक्षित करते हुए आधुनिक कार्यात्मक आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला जाना चाहिए।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, सीबीआईसी के क्षेत्रीय कार्यालयों में कार्यालय और आवासीय भवनों का विकास महज एक निर्माण गतिविधि नहीं है; यह राष्ट्र के सुशासन, आर्थिक स्थिरता और कर्मचारी कल्याण में एक रणनीतिक निवेश है। एक आधुनिक और सुसज्जित बुनियादी ढांचा सीबीआईसी को अपनी पूर्ण क्षमता से कार्य करने, राजस्व संग्रह को अधिकतम करने और एक निष्पक्ष और पारदर्शी कर प्रणाली प्रदान करने में सक्षम बनाएगा। जब हम एक मजबूत और आत्मनिर्भर भारत की कल्पना करते हैं, तो हमें उन संस्थानों और उनके कर्मियों को मजबूत करना होगा जो इस कल्पना को साकार करने के लिए दिन-रात काम करते हैं। सीबीआईसी के बुनियादी ढांचे में किया गया हर निवेश, इस दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा।

राजभाषा के रूप में हिंदी की वर्तमान स्थिति और उसके प्रचार-प्रसार हेतु उठाए गए सरकारी कदम

धर्मपाल
सहायक निदेशक (राजभाषा)

स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान हमारे स्वतंत्रता सेनानियों का ध्येय केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने तक ही सीमित नहीं था अपितु वे स्वतंत्र भारत की सांस्कृतिक मुक्ति के भी पक्षधर थे। उनका संघर्ष 'स्वराज' से बढ़कर 'स्वतंत्र राष्ट्र' में स्वदेशी और स्वभाषा की स्थापना करना था। यही कारण है कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बाल गंगाधर तिलक,वीर सावरकर,महात्मा गांधी,नेताजी सुभाषचंद्र बोस तथा सी.राजगोपालाचारी जैसे स्वतंत्रता संग्राम के नायक हिंदी को स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा बनाने के पक्षधर थे। इस संबंध में स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय वायसराय सी.राजगोपालाचारी का निम्नलिखित कथन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है-

"हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी।"

स्वतंत्रता के इसी आदर्श को साकार करने के लिए संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का प्रस्ताव पारित किया। संविधान में अनुच्छेद-343 के तहत संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी को मान्यता प्रदान की गई है। तब से लेकर आज के समय तक हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए विभिन्न सरकारों ने अनेक प्रयास किये हैं। सर्वप्रथम संविधान के अनुच्छेद-344 के अनुपालन के लिए वर्ष 1955 में राष्ट्रपति के आदेश से राजभाषा आयोग की स्थापना की गई।

इस तरह उम्मीद की जा रही थी कि स्वतंत्रता संग्राम एवं संविधान की अपेक्षाओं के अनुरूप वर्ष 1965 के पश्चात् हिंदी देश की एकमात्र राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो जाएगी, किंतु तमिलनाडु एवं पश्चिम बंगाल में हिंदी के विरुद्ध उपजे राजनीतिक आंदोलन के कारण राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित किया गया। इसके तहत 26 जनवरी, 1965 के पश्चात् भी हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेज़ी का प्रयोग यथावत करते रहने का प्रावधान किया गया। इसके साथ ही हिंदी की स्थिति राजभाषा की अपेक्षा अंग्रेज़ी की एक सहायक भाषा की तरह ही रह गई। इसके पश्चात् भी राष्ट्रपति के आदेशों एवं अन्य माध्यमों से विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी को राजभाषा के रूप में बढ़ावा देने के प्रयास किए गए।

आधुनिक समय में राजभाषा हिंदी की स्थिति देखी जाए तो वर्तमान में तीन मंत्रालय राजभाषा के विकास एवं प्रोत्साहन के लिए संकल्पित हैं। इसमें गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग के माध्यम से विभिन्न मंत्रालयों में हिंदी को प्रोत्साहन देने, अधिकारियों को हिंदी का प्रशिक्षण देने तथा 'केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो' के माध्यम से प्रशासनिक साहित्य के अनुवाद का कार्य करता है। वहीं विधि मंत्रालय विधि साहित्य के अनुवाद का कार्य करता है तो शिक्षा मंत्रालय 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय' के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी को प्रोत्साहन दे रहा है। इसी तरह विदेश मंत्रालय राजभाषा के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

राजभाषा हिंदी को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिए विश्व हिंदी सम्मेलन की संकल्पना राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने की थी तथा इसके पश्चात वर्ष 1975 से विश्व हिंदी सम्मेलनों का सिलसिला प्रारंभ हुआ। इसके प्रारंभिक 9 सम्मेलन भाषा की अपेक्षा साहित्य केंद्रित अधिक रहे थे किंतु वर्ष 2015 में 'झीलों के शहर' भोपाल में आयोजित 10 वें विश्व हिंदी सम्मेलन से दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन हुआ। तत्कालीन विदेश मंत्री स्वर्गीय श्रीमती सुषमा स्वराज ने हिंदी के प्रति अपने विशेष अनुराग के चलते सम्मेलन को परिणाममूलक बनाने पर बल दिया। इस सम्मेलन का विषय 'हिंदी जगत, विस्तार एवं संभावनाएँ' रखा गया जिसने राजभाषा की प्रगति को लेकर सरकार के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया। यही दृष्टिकोण मॉरीशस में आयोजित 11वें सम्मेलन में दृष्टिगोचर होता है जिसमें भाषा के साथ संस्कृति को भी जोड़ दिया गया। विगत 7 वर्षों में राजभाषा हिंदी के प्रसार के लिए सरकार ने अनेक प्रयास किए हैं जिन्हें शिक्षा एवं विज्ञान, प्रशासन तथा विधि एवं न्याय, संचार एवं सूचना तथा विदेश नीति में हिंदी के प्रसार के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के तौर पर देखा जा सकता है।

राजभाषा हिंदी के विकास के लिए प्रशासन तथा विधि एवं न्याय के क्षेत्र में सरकार के प्रयास सबसे महत्त्वपूर्ण हैं। इस दिशा में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित केंद्रीय हिंदी समिति के सुझाव पर अमल करते हुए 17 सितंबर, 2020 को नीति- निर्देश जारी किये गए हैं जिसमें सरकारी हिंदी एवं सामाजिक हिंदी में अंतराल कम करने तथा दूसरी भाषाओं के शब्द हिंदी में शामिल करने की बात की गई है। हर वर्ष प्रशासन एवं विधि क्षेत्र से संबंधित हज़ारों शब्दों का विकास किया जा रहा है। विधि मंत्रालय द्वारा 65 हज़ार शब्दों की 'विधि-शब्दावली' तैयार की गई है। राष्ट्रपति महोदय ने न्यायपालिका के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने पर बल दिया था। इसी को ध्यान में रखते हुए सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों का हिंदी अनुवाद वेबसाइट पर अपलोड किया जाने लगा है। इसके साथ ही अब वित्तीय क्षेत्र में भी यूपीआई तथा बैंकिंग जैसी सुविधाएँ हिंदी में भी उपलब्ध हैं। प्रधानमंत्री कार्यालय, गृह मंत्रालय तथा अन्य मंत्रालयों में फाइलों पर हिंदी में कामकाज बढ़ा है।

राजभाषा को सशक्त करने का सबसे अच्छा माध्यम शिक्षा ही है। इस दिशा में नवीन शिक्षा नीति, 2020 के द्वारा प्रयास किये गए हैं। इसके अंतर्गत भाषा की शक्ति को पहचानते हुए बहुभाषा व्यवस्था पर बल दिया गया है। इसके तहत विद्यार्थियों को कक्षा 5वीं तक मातृभाषा में निर्देश देने की अनिवार्यता है तथा आगे की कक्षाओं में भी मातृभाषा में निर्देश देने पर बल दिया गया है। इसके साथ ही 'त्रिभाषा सूत्र' का भी प्रावधान है जो राजभाषा हिंदी को मज़बूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। विज्ञान के क्षेत्र में विज्ञान-प्रसार संस्था द्वारा ड्रीम-2047 के नाम से द्वि-भाषिक मासिक न्यूज़ लेटर का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके साथ ही विज्ञान संबंधित आधा दर्जन से अधिक मंत्रालय हिंदी में सूचनाएँ उपलब्ध कराने लगे हैं। अब एमबीबीएस तथा बीडीएस प्रवेश परीक्षाएँ हिंदी माध्यम में भी देना संभव है। इसके साथ ही अब चिकित्सा एवं अभियांत्रिकी शिक्षा भी हिंदी भाषा में संभव होगी, जिससे राजभाषा हिंदी में रोज़गार के नए अवसर प्राप्त होंगे।

संचार एवं सूचना तकनीकी के क्षेत्र में 'डिजिटल इंडिया' अभियान ने राजभाषा के विकास के नए आयाम खोल दिये हैं। भारत सरकार ने अधिसूचना के माध्यम से 1 जुलाई, 2017 के बाद से बिकने वाले प्रत्येक मोबाइल में क्षेत्रीय भाषा का समर्थन होना अनिवार्य कर दिया है। राजभाषा विभाग 'ई-महाशब्दकोश' निशुल्क उपलब्ध करा रहा है। इस क्षेत्र में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा ने 'हिंदी समय डॉट कॉम' नाम से एक वेबसाइट का विकास किया है जिसमें 4 लाख से ज्यादा पृष्ठ हैं, जिसमें साहित्य के शब्दकोश और वर्तनी शुद्धि उपकरण भी उपलब्ध हैं। इसके साथ सभी मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनियों को सरकार ने ग्राहकों को राजभाषा हिंदी में संदेश देने का आदेश दिया है।

वर्ष 2014 के पश्चात् विदेश नीति में हिंदी का व्यापक महत्त्व बढ़ा है। वर्ष 1977 में तत्कालीन विदेशमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र में पहली बार हिंदी में भाषण देने की जो अनूठी पहल की थी, वह वर्तमान में सामान्य परंपरा बन गई है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपने लगभग सभी उद्बोधन राजभाषा हिंदी में ही देते हैं। इसके साथ ही सरकार ने विभिन्न भारतीय दूतावास में कार्यरत व्यक्तियों को हिंदी का अधिक प्रयोग करने का निर्देश दिया है। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने की दिशा में निरंतर प्रगति हो रही है। इस दिशा में संयुक्त राष्ट्र से हिंदी में समाचारों का प्रसारण, सोशल मीडिया में हिंदी प्रयोग तथा वेबसाइट में हिंदी का उपयोग सार्थक कदम है। वर्ष 2018 में मॉरीशस स्थित विश्व हिंदी सचिवालय के भवन का लोकार्पण हुआ है तथा यह राजभाषा के विकास में सक्रिय भूमिका निभाने लगा है। अब पासपोर्ट के लिए आवेदन फॉर्म हिंदी में भी उपलब्ध है। इंडियन कॉउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स ने विदेश नीति से संबंधित अनूदित के साथ मूल पुस्तकों का प्रकाशन प्रारंभ कर दिया है।

इसी तरह राजभाषा को आम जन से जोड़ने के उद्देश्य से नवंबर 2021 में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन पहली बार दिल्ली से बाहर वाराणसी में आयोजित किया गया। इस दौरान आज़ादी के अमृत महोत्सव में राजभाषा के प्रसार के लिए सरकार की ओर से अधिक गंभीर प्रयास का संकल्प दोहराया गया।

यह सही है कि पिछले 75 वर्षों में राजभाषा हिंदी के विकास में अच्छी-खासी प्रगति हुई है किंतु स्वतंत्रता संग्राम के नायकों तथा संविधान निर्माताओं ने राजभाषा हिंदी को लेकर जो स्वप्न देखा था वह आज भी अधूरा है। वर्तमान में सरकारी हिंदी में प्रामाणिकता का अभाव है तथा विधियों एवं नियमों का अनुवाद बोधगम्य नहीं है। सरकार के स्तर पर राजभाषा से संबंधित कार्यों में एकरूपता का अभाव है तथा यह कई मंत्रालयों में विभाजित है। आज भी सरकारी नौकरियों तथा निजी क्षेत्र में उच्च पदों के लिए अंग्रेज़ी 'अनिवार्य' बनी हुई है तथा राजभाषा हिंदी का रोज़गार सृजक न होने के कारण यह युवा पीढ़ी के आकर्षण का केंद्र नहीं बन पा रही है। वास्तव में राजभाषा को उसका वास्तविक स्थान प्रदान करने के लिए हिंदी को प्रशासन, विधि, तकनीक तथा उच्च एवं व्यावसायिक शिक्षा के अनुकूल बनाने की आवश्यकता है।

भारत की आत्मा में बसा एक गीतकार– शैलेन्द्र

लाजपत राय
सहायक निदेशक

भारतीय फिल्म जगत ने देश को कई मशहूर कलाकार दिए हैं। गीतकार, संगीतकार, अभिनेता आदि की एक ऐसी जमात भी रही है जो न केवल अच्छे कलाकार रहे हैं बल्कि बेहतरीन इंसान भी रहे हैं। रेलवे के एक कर्मचारी को भला कौन जान पाता अगर राजकपूर जैसे लोग उस कर्मचारी को फिल्मों में गीत लिखने के लिए आमंत्रित न करते? यही रेलवे का कर्मचारी एक दिन देश विदेश में शैलेन्द्र के नाम से मशहूर हुआ जिसने शंकर जयकिशन के साथ मिलकर हिंदी संगीत जगत में इतिहास रच दिया।

मशहूर गीतकार शैलेन्द्र जिन्हें मशहूर फिल्मकार राज कपूर प्यार से "पुश्किन" कहकर बुलाते थे, वो शायद इसलिए कि पुश्किन एक साम्यवादी कवि माने जाते हैं और शैलेन्द्र जी भी साम्यवादी पृष्ठभूमि से ही आते थे। हालांकि ये समानता यहीं तक थी क्योंकि पुश्किन एक धनी और संभ्रांत रूसी परिवार में पैदा हुए थे जबकि शैलेन्द्र एक गरीब और दलित परिवार से आते थे और उनका प्रारंभिक जीवन अत्यंत संघर्षमय रहा था। शायद इसीलिए स्वाभाविक रूप से प्रारंभ से ही साम्यवादी आन्दोलन से जुड़ गए थे। उन दिनों उनका दिया हुआ एक नारा आज भी धरनों, प्रदर्शनों के दौरान खूब लगाया जाता है।

हर जोर जुल्म की टक्कर में हड़ताल हमारा नारा है...

जी हाँ, यह फ़िल्मी गीत गीतकार शैलेन्द्र जी का ही दिया हुआ नारा है। उनका ट्रेड यूनियन के लिए लिखा गया गीत आज भी हर कर्मचारी यूनियन की सभा में गाया जाता है।

तू ज़िन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यकीन कर,
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर!
ये ग़म के और चार दिन, सितम के और चार दिन,
ये दिन भी जाएंगे गुज़र, गुज़र गए हज़ार दिन,
कभी तो होगी इस चमन पर भी बहार की नज़र!
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर!.... तू ज़िन्दा है

उन्होंने गरीबी देखी थी और आम आदमी के दर्द से भी खूब वाफिक थे जोकि उनके गीतों में भी झलकता है। उदाहरण के लिए–

छोटे से घर में गरीब का बेटा, मैं भी हूँ मां के नसीब का बेटा

रंजो ग़म बचपन के साथी, आँधियों में जली दीपक बाती
धूप ने है बड़े प्यार से पाला, दिल का हाल सुने दिलवाला
सीधी सी बात न मिर्च मसाला, कह के रहेगा कहने वाला

एक और उदाहरण देखिए-

सूरज जरा आ पास आ
आज सपनों की रोटी पकाएंगे हम
ओ आस्मा तू बड़ा मेहरबां
आज तुझको भी दावत खिलाएंगे हम
चूल्हा है ठण्डा पड़ा और पेट में आग है
गरमा गरम रोटी कितना हसीं ख्वाब है

कितने सरल शब्दों में उन्होंने गरीबों वंचितों की आशाओं, आकांक्षाओं को अपनी इन पंक्तियों में उकेर दिया है, जहाँ सिर्फ एक गरम रोटी का मिलना भी एक बहुत बड़ा सपना है। लेकिन इसके बावजूद भी वो गरीब सूरज को भी खाने की दावत देके अपना बड़ा दिल दिखा रहें है।

शैलेन्द जी द्वारा ऐसी परिस्थितियों से निकल कर चित्रपट की ऊँचाइयों को छू लेना एक बहुत बड़ी उपलब्धि प्रतीत होती है। अपने एक मशहूर गीत में जो वो कह रहे है वो शायद उनके लिए है जिनके बीच से वो निकलकर आए थे !

सहज है सीधी राह है पे चलना देख के उलझन बच के निकलना
कोई ये चाहे माने न माने बहुत है मुश्किल गिरके संभलना !

अपनी प्रतिभा के दम पर उन्हें फिल्म इंडस्ट्री में काम तो खूब मिला लेकिन अफ़सोस कि यह प्रतिभा उनको सरकार से कभी कोई पुरस्कार नहीं दिलवा सकी। उन्हें भारत सरकार या किसी भी राज्य सरकार से उनके जीवन काल में कभी कोई पुरस्कार नहीं मिला। शायद पुरस्कार के लिए प्रतिभा के साथ ही ख़ास किस्म की पृष्ठभूमि भी चाहिए जो कि उनकी नहीं थी।

आज शैलेन्द्र हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके चाहने वाले आज भी उनके ही शब्दों में उनको पुकारते रहते हैं-

ओ जाने वाले, हो सके तो लौटके आना,
ये घाट तू ये बाट कहीं भूल ना जाना!!

अपने गीतों के माध्यम से गीतकार शैलेन्द्र आज भी करोड़ो गीत प्रेमियों के दिलों में जिन्दा हैं और हमेशा रहेंगें।

हनुमान जी की लंका यात्रा से मिली शिक्षाएं

विक्रम सिंह
अपर सहायक निदेशक

हम सभी जानते हैं कि हनुमान जी अपने प्रभु श्रीराम के परम भक्त, आज्ञाकारी और निष्ठावान सेवक थे। सरकारी सेवक होने के नाते हम भी हनुमान जी की जीवन यात्रा से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। इस लेख में हम हनुमान जी के लंका यात्रा के दौरान उनसे प्राप्त 7 महत्वपूर्ण शिक्षाओं पर चर्चा करेंगे, जो न केवल हमारे व्यक्तिगत जीवन बल्कि कार्यस्थल पर भी लागू होती हैं।

योजना बनाना और आत्मविश्वास बढ़ाना-

जब श्रीराम की वानर सेना माता सीता की खोज में समुद्र पार करने की योजना बना रही थी, तब अंगद का मन निराश था और वह विशाल समुद्र को देखकर हताश हो गए थे। इस पर हनुमान जी ने उन्हें साहस देते हुए कहा कि हमारे पास एक ऐसा कोई न कोई पुराना और अनुभवी सदस्य जरूर होगा, जो हमें सही मार्गदर्शन दे सके। हनुमान जी की यह विशेषता थी कि वह अपनी सेना के सभी सदस्यों को प्रेरित और उत्साहित रखते थे, खासकर जब वे हताश और निराश होते थे।

इस शिक्षा को हम अपने कार्यस्थल पर भी लागू कर सकते हैं। जो साथी सहकर्मी अनुभवहीन या मानसिक रूप से थके हुए महसूस कर रहे हों, उन्हें प्रोत्साहित करना और उनका हौसला बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है। असली सफलता अहंकार नहीं, बल्कि सहयोग और विनम्रता से मिलती है।

काम का सही तरीके से वितरण-

जब जामवंत ने हनुमान जी से उनकी शक्ति के बारे में बात की, तो उन्होंने कहा कि पहले वह स्वयं युवा थे और समुद्र पार करने के लिए सक्षम थे, लेकिन अब हनुमान जी को यह काम करने का अवसर दिया, ताकि वह सफल हो सकें और प्रसिद्धि प्राप्त कर सकें।

हमें अपने कार्यस्थल पर कभी-कभी दूसरों को मौका देना चाहिए, भले ही हम खुद सक्षम हों। जब हम दूसरों को अवसर देते हैं, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अपना सर्वोत्तम देते हैं। यह टीमवर्क और नेतृत्व की सच्ची भावना को दर्शाता है।

दूसरों को प्रोत्साहित करना-

जामवंत ने हनुमान जी को उनकी पुरानी शक्तियों और क्षमताओं को याद दिलाया, जो उन्होंने समय के साथ भुला दी थीं। उनके प्रोत्साहन से हनुमान जी का आत्मविश्वास लौटा और वह लंका यात्रा के लिए पूरी तरह तैयार हो गए।

वरिष्ठ अधिकारी हमेशा अपने कनिष्ठ कर्मचारियों को प्रोत्साहित करें और उनकी पुरानी उपलब्धियों और क्षमताओं को याद दिलाएं। इससे न केवल उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा, बल्कि वे भविष्य में और बेहतर प्रदर्शन करेंगे।

कार्य प्रारंभ करने से पहले आशीर्वाद प्राप्त करना-

हनुमान जी ने श्रीराम से प्रार्थना की और उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया जो उनकी सफलता का कारण बना। वह हमेशा विनम्र रहते हुए प्रभु के प्रति श्रद्धा और आस्था रखते थे।

कार्य प्रारंभ करने से पहले अनुभवी और वरिष्ठ अधिकारियों से मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए। यह हमें सही दिशा में काम करने की शक्ति और प्रेरणा प्रदान करता है।

सुख-सुविधाओं की बजाय प्रयत्न पर ध्यान केंद्रित करना-

हनुमान जी ने मैनाक पर्वत पर विश्राम करने के प्रस्ताव को नकारा और अपनी यात्रा पर ध्यान केंद्रित किया। उनका एकमात्र लक्ष्य था सीता माता को ढूंढना और श्रीराम का संदेश देना।

कार्यस्थल पर कई बार हमें आराम और सुविधाओं का लालच आता है, लेकिन यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि यदि हम अपने कार्य पर फोकस नहीं करेंगे, तो हम अपने उद्देश्य को हासिल नहीं कर पाएंगे। हमें अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

ईर्ष्या से बचना-

हनुमान जी की यात्रा के दौरान उन्होंने कभी भी किसी से ईर्ष्या नहीं की। वह पूरी तरह से अपने काम पर केंद्रित थे और दूसरों की सफलता में भी खुश रहते थे।

कार्यस्थल पर ईर्ष्या और जलन को दूर करना चाहिए। सभी को एक-दूसरे की सफलता पर खुश होना चाहिए, क्योंकि अगर हम एक-दूसरे से ईर्ष्या करते हैं, तो हमारी कार्यक्षमता और कार्यस्थल का माहौल नकारात्मक हो सकता है।

संतुलित दृष्टिकोण बनाए रखना-

हनुमान जी ने लंका की यात्रा के दौरान कई कठिनाइयों का सामना किया, लेकिन वह हमेशा शांत, संतुष्ट और खुश रहे, क्योंकि उनका ध्यान अपने उद्देश्य और प्रभु श्रीराम पर था।

हमें अपने काम और जीवन में सही दृष्टिकोण बनाए रखना चाहिए। जब हम सही मानसिकता के साथ काम करते हैं, तो न केवल हमें खुशी मिलती है, बल्कि हम अपने कार्यों को बेहतर तरीके से पूरा कर पाते हैं।

हनुमान जी की जीवन यात्रा से हमें यह सीखने को मिलता है कि सफलता सिर्फ व्यक्तिगत प्रयासों से नहीं, बल्कि टीमवर्क, परिश्रम, विनम्रता और सही मानसिकता से मिलती है। अगर हम अपने कार्यस्थल पर इन शिक्षाओं को अपनाते हैं, तो न केवल हम व्यक्तिगत रूप से सफल होंगे, बल्कि हमारा कार्यस्थल भी एक सकारात्मक और सहयोगपूर्ण माहौल बन सकेगा।

आधुनिक मनोवैज्ञानिक समस्याएँ- कारण, प्रभाव और समाधान

अमरनाथ प्रसाद
तकनीकी अधिकारी

भूमिका

आज का युग विज्ञान, तकनीक और आधुनिकता का युग है। जीवन की गति पहले से कहीं तेज़ हो गई है, जीवनशैली सुविधाजनक हुई है और भौतिक संसाधनों की उपलब्धता भी बढ़ी है। परंतु इस विकास के बीच, मनुष्य के आंतरिक जीवन में असंतुलन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। मानसिक अस्वस्थता और मनोवैज्ञानिक समस्याओं की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। जहां एक ओर शरीर की बीमारियों के लिए अस्पताल हैं, वहीं मानसिक रोगों के प्रति समाज में आज भी जागरूकता और संवेदनशीलता की कमी है।

मनोवैज्ञानिक समस्याएँ क्या हैं?

मनोवैज्ञानिक समस्याएँ वे मानसिक अवस्थाएँ होती हैं, जो व्यक्ति के सोचने, समझने, अनुभव करने और व्यवहार करने की क्षमता को प्रभावित करती हैं। इनका प्रभाव व्यक्ति की दैनिक गतिविधियों, संबंधों और निर्णय लेने की शक्ति पर भी पड़ता है

आधुनिक युग की प्रमुख मनोवैज्ञानिक समस्याएँ

तनाव- भागदौड़ भरी ज़िंदगी, प्रतियोगिता, काम का दबाव, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और भविष्य की चिंता-ये सभी कारण व्यक्ति को लगातार मानसिक तनाव में रखते हैं। लंबे समय तक बना रहने वाला तनाव डिप्रेशन, हाई ब्लड प्रेशर, और नींद संबंधी विकारों का कारण बन सकता है।

अवसाद- आज अवसाद एक वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य संकट बन गया है। इसमें व्यक्ति निराशा, उदासी, निरर्थकता और ऊर्जा की कमी अनुभव करता है। कई बार यह व्यक्ति को आत्महत्या जैसे चरम निर्णयों तक भी ले जाता है।

चिंता विकार- भविष्य की अनिश्चितता, असफलता का डर और सामाजिक दबाव के कारण लोग अत्यधिक चिंता का अनुभव करते हैं। यह चिंता कभी-कभी घबराहट (Panic Attacks) या सोशल एंग्जायटी जैसे विकारों का रूप ले लेती है।

डिजिटल लत- मोबाइल, सोशल मीडिया, इंटरनेट और गेमिंग ने इंसान को वास्तविक जीवन से दूर कर दिया है। बच्चे, किशोर और यहां तक कि वयस्क भी इसके शिकार हो चुके हैं। यह लत नींद, ध्यान, उत्पादकता और संबंधों को बुरी तरह प्रभावित करती है।

एकाकीपन और सामाजिक अलगाव- आधुनिकता के साथ-साथ परिवारों का विघटन, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, और डिजिटल युग की व्यस्तता ने लोगों को सामाजिक रूप से अकेला कर दिया है। अकेलापन मानसिक अवसाद को जन्म देता है।

पहचान का संकट- विशेषकर किशोर और युवा पीढ़ी में यह समस्या आम है। करियर, जीवन शैली, लिंग पहचान, और सामाजिक भूमिका को लेकर भ्रम बना रहता है। यह आत्मविश्वास को डगमगाता है।

भविष्य की अनिश्चितता- वर्तमान में रोजगार, पर्यावरण, संबंध, और विश्व राजनीति की अनिश्चितता से लोग मानसिक रूप से असुरक्षित अनुभव करते हैं, जिससे उनका मनोबल गिरता है।

मनोवैज्ञानिक समस्याओं के प्रभाव-

1. मानसिक स्वास्थ्य के बिगड़ने से शारीरिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है।
2. व्यक्ति का कार्य प्रदर्शन, सीखने की क्षमता, और सामाजिक जीवन कमजोर हो जाता है।
3. पारिवारिक जीवन और संबंधों में दरार आ जाती है।
4. गंभीर मामलों में यह अपराध, आत्महत्या और नशे की प्रवृत्तियों को जन्म देता है।

मनोवैज्ञानिक समस्याओं के प्रमुख कारण

कारण	विवरण
अत्यधिक प्रतिस्पर्धा	शिक्षा, नौकरी और सामाजिक स्थिति को लेकर अत्यधिक होड़
पारिवारिक विघटन	संयुक्त परिवारों के विघटन से भावनात्मक समर्थन की कमी
सामाजिक अपेक्षाएँ	समाज द्वारा थोपे गए मानकों के अनुरूप न जी पाने का बोझ
डिजिटल यंत्रों पर निर्भरता	मोबाइल और इंटरनेट से वास्तविक जीवन से दूरी
स्वास्थ्य उपेक्षा	व्यायाम, ध्यान और नियमित जीवनशैली की उपेक्षा

मनोवैज्ञानिक समस्याओं के समाधान एवं सुझाव

1. मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता : स्कूल, कॉलेज और कार्यस्थलों पर मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।
2. मनोवैज्ञानिक परामर्श को सामान्य बनाना : साइकोलॉजिस्ट से बात करना मानसिक कमजोरी नहीं, बल्कि समझदारी है।
3. योग, ध्यान और प्राणायाम : ये तकनीकें मानसिक संतुलन बनाए रखने में अत्यंत सहायक हैं।
4. सकारात्मक सोच और आत्ममूल्यांकन : स्वयं को समझना, स्वीकारना और सुधारना मानसिक दृढ़ता को बढ़ाता है।
5. डिजिटल संतुलन : सोशल मीडिया और स्क्रीन टाइम को नियंत्रित करने की आदत डालनी चाहिए।
6. मजबूत सामाजिक संबंध : परिवार और मित्रों के साथ समय बिताना मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।

निष्कर्ष-

मानसिक समस्याएं आज के समय की एक गंभीर और व्यापक चुनौती बन चुकी हैं। यदि इन पर समय रहते ध्यान न दिया जाए, तो यह केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी गंभीर परिणाम दे सकती हैं। आज ज़रूरत है कि मानसिक स्वास्थ्य को शारीरिक स्वास्थ्य जितनी ही प्राथमिकता दी जाए, ताकि एक संतुलित, खुशहाल और सक्षम समाज का निर्माण हो सके।

मनालीः शांति, सुकून और सफ़र

रश्मि यादव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

व्यस्त जीवन शैली, गर्मी और प्रदूषण से राहत पाने और सुकून के कुछ पल बिताने के लिए मैंने अप्रैल माह में मनाली घूमने जाने की योजना बनाई। मनाली, हिमाचल प्रदेश राज्य के कुल्लू जिले में स्थित एक प्रमुख पर्यटन नगर है। यह कुल्लू जिले का हिस्सा है और कुल्लू से लगभग 40 किलोमीटर उत्तर में व्यास नदी के किनारे स्थित है। यह पर्यटन, प्राकृतिक सौन्दर्य, बर्फ़बारी, साहसिक खेल एवं धार्मिक स्थल के लिए प्रसिद्ध है। संयोग से अप्रैल माह में एक आकस्मिक अवकाश लेने के बाद सप्ताहांत में पांच दिन का अवकाश मिल रहा था। एक सरकारी कर्मचारी ऐसे ही लम्बे सप्ताहांत के इंतजार में रहता है, तो बस हम (मैं और मेरे पतिदेव) चल पड़े मनाली की यात्रा पर। हमने रात में दिल्ली से वॉल्वो बस ली, जिसने लगभग 13 घंटे के सफ़र के बाद हमें सुबह मनाली पहुंचा दिया। सुबह जब हमारी आँख खुली तो हम मनाली में थे। वहां चारों तरफ पहाड़, हरे-भरे देवदार के वृक्ष दिखाई दे रहे थे, जिन्हें देख कर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही थी। जब हम बस से बाहर आये तो हमें ठण्ड का अनुभव हो रहा था क्योंकि उस वक्त मनाली का तापमान लगभग 5 डिग्री सेल्सिअस था। दिल्ली और मनाली के तापमान में काफी अंतर था।

बस स्टैंड से टैक्सी लेकर हम उस होटल में पहुंचे जहाँ हमने पहले से कमरा बुक किया था लेकिन वो कमरा पसंद ना आने की वजह से हम दूसरे कमरा की तलाश में निकल गये। दोपहर के लगभग 12 बज चुके थे और उस वक्त जब मैंने मोबाइल में तापमान देखा तो वहां का तापमान 1 डिग्री सेल्सिअस था और बर्फ़बारी का मौसम भी दिखा रहा था। मेरा तो मन कर रहा था कि नए होटल की खोज को रोक कर पहले बर्फबारी वाले स्थान पर जाकर उसका आनंद लिया जाये। लेकिन हम बहुत थक चुके थे, इसलिए हमने पहले ठहरने के लिए दूसरा होटल देखा। लम्बा सप्ताहांत होने की वजह से रूम मिलने में काफी समस्या का सामना करना पड़ा। अंततः हमें एक कमरा मिला और उस वक्त दोपहर के लगभग 2 बज चुके थे। हम कहीं भी जाने की स्थिति में नही थे क्योंकि हम थक चुके थे। होटल में थोड़ा आराम करने के बाद हम शाम को मॉल रोड पर घूमने के लिए निकल पड़े। वहां पर हमने मनाली की पारम्परिक वेशभूषा में कुछ फोटो खिंचवाई, ठंडी से राहत के लिए चाय पी, थोड़ी खरीददारी की और अपने होटल वापस आ गये।

दूसरे दिन अटल सुरंग और सिस्सू जाने के लिए हम सुबह जल्दी उठकर निकल गये ताकि ट्रैफिक का सामना ना करना पड़े। अटल सुरंग हिमाचल प्रदेश के रोहतांग दर्रे के नीचे पीर पंजाल पर्वत शृंखला में निर्मित 9.2 किलोमीटर लम्बी, एकल-टेबल, दो लेन सुरंग है। अटल सुरंग का आकार घोड़े की नाल जैसा है। यह 8 मीटर चौड़ी और 5.25 मीटर ऊँची है। अटल सुरंग में हर 60 मीटर की दूरी पर सीसीटीवी कैमरा, हर 150 मीटर पर आपातकालीन फोन, हर 500 मीटर पर आपातकालीन निकास सुरंग, हर 60 मीटर पर फायर हाइड्रेंट एवं हर 1 किलोमीटर पर वायु गुणवत्ता मॉनिटरिंग उपकरण लगाया गया है। यह भारत की पहली हाई एल्टीट्यूड सुरंग है, जिसमें 4G नेटवर्क उपलब्ध है। अटल सुरंग की वजह से मनाली से लाहौल-स्पीती/लेह की दूरी लगभग 46 किलोमीटर कम हुई और यात्रा समय 4-5 घंटे कम हो गया है। सर्दियों में बर्फ़बारी के दौरान रोहतांग दर्रे को बायपास करके साल भर मार्ग खुला रहता है। भारतीय सेना के लिए यह सुरंग आपूर्ति लाइन में बेहद महत्वपूर्ण है।

अटल सुरंग जाने के मार्ग में बर्फ से ढके हुए पहाड़, उन पर पड़ती हुई सूर्य की किरण और हरे-भरे वृक्ष, यह सब देख कर जो आनंद और सुकून मिल रहा था उसकी व्याख्या मैं शब्दों में नहीं कर सकती। हम लगभग 8:30 बजे अटल सुरंग के प्रवेश द्वार पर पहुँच गये थे। वहां पर थोड़ी देर घूमने के बाद हम मनाली से लगभग 40 किलोमीटर दूर सिस्सू, जो कि अटल सुरंग के उत्तर पोर्टल के पास स्थित है, के लिए निकल पड़े। सिस्सू जाने के मार्ग में पहाड़ पूरी तरह से बर्फ से ढके हुए थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो पहाड़ों पर सफ़ेद बर्फ की चादर डाल दी हो। यह दृश्य अत्यंत ही मनोरम था। सिस्सू, लाहौल स्पीती जिले में चंद्रा नदी के किनारे बसा एक गाँव है। यहाँ की वादियाँ, बर्फ से ढके पहाड़ और बहती हुई चंद्रा नदी का दृश्य मन को मोह लेता है। जब हम यहाँ पहुंचे तो चारों तरफ सफ़ेद बर्फ की चादर बिछी हुई थी क्योंकि यहाँ एक दिन पहले और शायद रात में भी बर्फ़बारी हुई थी। चारों तरफ बर्फ देख कर मेरी खुशी का तो ठिकाना ही नहीं था। यहाँ पर मैंने ज़िप लाइनिंग की, पहाड़ों वाली मैगी खायी और फिर हम अटल सुरंग के उत्तर पोर्टल की तरफ वापस चल पड़े जहाँ स्नो पॉइंट था, जिसे स्नो पॉइंट कोस्कर के नाम से जाना जाता है।

अटल सुरंग के उत्तर पोर्टल पर स्नो पॉइंट पर हमने बर्फ पर फिसलने, स्नो स्कूटर राईडिंग जैसी क्रियाओं का आनंद लिया और वहां बर्फ से ढके पहाड़ों पर कुछ समय व्यतीत करने के बाद हम सोलंग वैली, जो मनाली से लगभग 13 किलोमीटर दूर कुल्लू जिले में स्थित है, के लिए निकल पड़े किन्तु रास्ते में ही बारिश शुरू हो गयी और हमें वापस अपने होटल आना पड़ा।

तीसरे दिन हम कुल्लू, "जिसे देवों की घाटी" भी कहते हैं, घूमने के लिए निकल पड़े। यह व्यास नदी के किनारे बसा हुआ है और अपनी प्राकृतिक सुन्दरता, पहाड़ियों, मंदिरों और मेलों के लिए प्रसिद्ध है। कुल्लू में अनेक साहसिक गतिविधियों जैसे रिवर राफ्टिंग, ट्रेकिंग, पर्वतारोहण और पैराग्लाइडिंग का आनंद लिया जा सकता है। रास्ते में हमने गर्म पानी का कुंड देखा, स्थानीय खाद्य पदार्थों की अनेक दुकानें थी, जहाँ पर हमने कुछ वस्तुएं भी खरीदी। उसके बाद मैंने पैराग्लाइडिंग की। पैराग्लाइडिंग के लिए नीचे से ऊपर पैराग्लाइडिंग पॉइंट पर जाना अपने आप में एक साहसिक कार्य है। ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर बनी सड़क पर यात्रा करना हमारे अन्दर एक अलग ही रोमांच भर देता है। पैराग्लाइडिंग का अनुभव मेरे लिए अविस्मरणीय रहा।

उसके बाद हम कुल्लू शाल की फैक्ट्री में गये और वहां पर हमने महिलाओं को करघे पर शाल की बुनाई करते हुए देखा। कुल्लू शाल की सबसे खास बात 'बॉर्डर पर बने हुए पारम्परिक डिज़ाइन, जिन्हें "पट्टियाँ" या "डिज़ाइन बैंड" कहते हैं, होती है। उसके बाद हम कुल्लू में स्थित वैष्णो देवी मंदिर, जो माता वैष्णो देवी को समर्पित है, में दर्शन करने के लिए गये। जम्मू कश्मीर स्थित कटरा के वैष्णो देवी मंदिर की तरह यहाँ भी एक गुफा मंदिर का स्वरूप देखने को मिला। माँ के दर्शन के लिए एक छोटी सी गुफा से होकर जाना पड़ता है। यहाँ की मूर्तियाँ और वातावरण अत्यंत शांत और भक्तिमय था। माँ के दर्शन के पश्चात् हमने वहां प्रसाद रूपी भंडारा खाया और उसके पश्चात् हम 'जाना' झरना देखने के लिए निकल गये।

जाना झरना मनाली से लगभग 35 किलोमीटर दूर कुल्लू जिले के जाना गाँव में स्थित है। हरे भरे जंगल, सेब के बाग़ और पहाड़ी रास्ते इस स्थान को बेहद शांतिपूर्ण और मनोहर बनाते हैं। झरने के आस पास का दृश्य अत्यंत ही सुन्दर और मनोरम था। वहां कुछ समय व्यतीत करने के बाद हम नग्गर कैसल के लिए निकल गये।

नग्गर कैसल कुल्लू घाटी का एक ऐतिहासिक रत्न है, जो मध्ययुगीन परम्पराओं और खुबसूरत प्राकृतिक दृश्यों का अद्भुत मिश्रण है। यह महल राजा सिद्ध सिंह ने लगभग 1460 ईस्वी में बनवाया था। यह लगभग 1500 वर्षों तक कुल्लू के राजाओं की राजधानी रहा। सन 1846 में ब्रिटिशों के अधिग्रहण के बाद इसे असिस्टेंट कमिश्नर को एक राइफल के एवज में सौंप दिया गया और 1947 तक यह कोर्ट या रेस्ट हाउस रहा। सन 1978 में एचपीडीटीसी ने इसे हेरिटेज होटल बनाया। भूकंप रोधी डिजाईन होने की वजह से 1905 के काँगड़ा भूकंप में यह खंडित नही हुआ जबकि आस पास के कई भवन टूट गये। महल के मध्य में एक खुला आँगन है, जिसकी बालकनियों से व्यास नदी और बर्फीली चोटियों को देखा जा सकता है। महल के उपरी आँगन में जगतिपत्त मंदिर है। महल के निकट प्रसिद्ध रूसी चित्रकार निकोलस रोएरिख आर्ट गैलरी है। महल के संग्रहालय में फर्नीचर, शाल, हथियार, चित्र और स्थानीय कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गयी हैं। महल के परिसर में तीन छोटे मंदिर हैं, जिनमें स्थानीय देवताओं की मूर्ति स्थापित की गयी है। इस महल में प्रवेश हेतु प्रति व्यक्ति 100 रूपये लगते हैं। नग्गर कैसल में अनेक फिल्मों जैसे "द हीरो, रोज़ा, जब वी मेट, बरसात, गीत, तेरे नाल लव हो गया, बैंग-बैंग, ट्यूब लाइट" आदि की शूटिंग की गयी है। इसके बाद जब हम बाहर आये तो मुझे एक स्टाल दिखा जिसपर हिमाचल का स्थानीय व्यंजन सिद्दू मिल रहा था। मैंने इस व्यंजन के बारे काफी सुना हुआ था और इसे खाने की मेरी बहुत इच्छा थी। अंततः मुझे मौका मिल ही गया और मैंने सिद्दू खाया, जो काफी स्वादिष्ट लगा। उसके पश्चात् हम मनाली वापस आ गये ।

आखिरी दिन हमने स्थानीय जगहों पर जाने की योजना बनाई। इस क्रम में हम सबसे पहले वशिष्ठ मंदिर गए। यह मंदिर मनाली से 3 किलोमीटर दूर वशिष्ठ गाँव में व्यास नदी के किनारे स्थित आध्यात्मिकता, प्राकृतिक सौन्दर्य और इतिहास का अद्भुत संगम है। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस मंदिर का नाम ऋषि वशिष्ठ के नाम पर रखा गया है, जो कि भगवान राम के कुलगुरु थे और सप्तऋषियों में से एक माने जाते हैं। कथाओं के अनुसार, जब उनके पुत्रों का वध राजा विश्वामित्र के द्वारा हुआ था, तब वे गहरे दुःख में थे और उन्होंने नदी में आत्महत्या करने का प्रयास किया लेकिन नदी ने उन्हें बचाया और उस स्थान पर उन्होंने तपस्या की। यह स्थान लगभग 4000 साल पुराना माना जाता है। यह मंदिर पारंपरिक हिमाचली शैली में बना है। मंदिर के ठीक पास ही सल्फर युक्त गर्म जल स्त्रोत है, जिसे वशिष्ठ स्नान या हॉट स्प्रिंग्स कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि इसमें स्नान करने से त्वचा रोग और अन्य बिमारियों से मुक्ति मिलती है। यहाँ दर्शन करने के पश्चात् हम हिडिम्बा देवी के मंदिर में दर्शन के लिए निकल पड़े।

मनाली घूम कर आने वाले हर व्यक्ति से मैंने हिडिम्बा देवी मंदिर के बारे में सुना था। इस मंदिर का निर्माण 1553 में महाराजा बहादुर सिंह ने करवाया था। पौराणिक कथाओं के अनुसार यह मंदिर देवी हिडिम्बि को समर्पित है, जो महाभारत के भीम की पत्नी थी। भीम ने यहाँ उनके भाई हिडिम्ब को पराजित किया था और बाद में हिडिम्बा से विवाह किया। विवाह के पश्चात् भीम चले गए तदुपरान्त हिडिम्बा ने तपस्या की और देवी बनकर लोगों की सेवा हेतु मंदिर का रूप ग्रहण किया। वहां जाने पर हमें पता चला कि मंदिर के ऊपर पेड़ गिरने की वजह से मंदिर का शिखर क्षतिग्रस्त हो गया था और वहां निर्माण कार्य चलने की वजह से मंदिर में प्रवेश अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया है। अतः मंदिर में जाकर दर्शन करने की मेरी यह इच्छा अधूरी रह गयी। इसके पश्चात् हम वहां से 3 किलोमीटर दूर ओल्ड मनाली में स्थित मनु मंदिर के लिए निकल पड़े।

मनु मंदिर वह स्थान माना जाता है, जहाँ मनु ऋषि (मनुस्मृति के रचयिता और मानवता के निर्माता) ने महाप्रलय के बाद ध्यान किया था। पौराणिक कथा के अनुसार, मनु ऋषि ने एक जलीय मछली को बचाया, जिसने बाद में भगवान विष्णु का अवतार बनकर प्रलय की सूचना दी। इसके बाद उन्होंने नाव बनाकर मानवता का पुनरारंभ किया। यह भारत में एकमात्र मंदिर है, जो विशेष रूप से मनु ऋषि को समर्पित है। यह मंदिर पैगोडा शैली में बना है। इसकी चार चढ़ावदार छतें हैं, जो नेपाल के मंदिरों जैसी लगती हैं। छतों की डिजाईन पतंग जैसी लगती है, जिससे यह पिरामिड या स्तूप जैसी बनावट धारण करती है, जो हिमाचल के पारम्परिक मंदिरों में खास है। मंदिर में दर्शन के पश्चात् हम वापस मॉल रोड आ गये और यहाँ से कुछ ही दूरी पर स्थित हिमालयन न्यिन्मापा बौद्ध मठ में गये।

यह मठ पारंपरिक पैगोडा शैली, चमकीले पीले-लाल रंग, लकड़ी और पत्थर की नक्काशीदार संरचना में बना है। मठ के अन्दर 4-5 फीट ऊँची बुद्ध की मूर्ति है। मठ में झांकियां, दीवारों पर रंग-बिरंगी बौद्ध थान्काएं और मंत्र लेखन वाले पहिये लगे हैं जिनका उपयोग जाप हेतु किया जाता है, बने हुए हैं। मठ परिसर में घूमने के पश्चात् हम वहां से कुछ ही दूरी पर स्थित वन विहार नेचर पार्क में चले गये।

वन विहार नेचर पार्क मॉल रोड से 400 मीटर की दूरी पर स्थित है। यह एक प्राकृतिक, शांत एवं पारिवारिक पिकनिक स्थल है। यहाँ देवदार के घने जंगल, झील की नौकायन और पहाड़ों की ठंडी हवा का आनंद लिया जा सकता है। इस वन विहार में हमने लगभग 2-3 घंटे व्यतीत किए। पेड़ो की छाँव और ठंडी-ठंडी एवं प्रदूषण रहित हवा का आनंद लिया। बस ऐसा लग रहा था कि यही रुक जाओ दिल्ली वापस आने का मन ही नही कर रहा था। लेकिन शाम के 4 बजे की हमारी दिल्ली की बस थी। पार्क में घूमने के बाद हम बस स्टैंड के लिए निकल गए। वापसी की यात्रा भी काफी रोमांचकारी थी। ऊँचे-ऊँचे पहाड़, हरे-भरे वृक्ष, नदी का पानी, कहीं तो बिलकुल शांत ठहरा हुआ सा और कहीं तेज बहाव के साथ बहता हुआ।

बस इन्ही सब दृश्यों को कैमरे में कैद करते हुए और फिर से ऐसे ही किसी शांत, प्रदूषण मुक्त और सुकून भरे स्थान पर घूमने जाने की योजना बनते हुए हम वापस दिल्ली आ गए।

चार दिनों की यह मनाली यात्रा हमारे लिए अद्भुत और रोमांचकारी रही। शहर की भागदौड़ से दूर, पहाड़ों के बीच रहकर एक अलग ही आनंद की अनुभूति हुई। इस यात्रा का अंत हो गया लेकिन इसकी यादें जीवन भर हमारे दिलों को उज्ज्वल करती रहेंगी।

वस्तुज्ञान से ज्यादा जरूरी है व्यक्तिज्ञान

स्वाति रानी
आशु लिपिक

मानव जीवन की जटिलताओं और उसकी विविध परिस्थितियों को समझने के लिए केवल वस्तुज्ञान ही पर्याप्त नहीं है। वस्तुज्ञान अर्थात् वस्तुओं, तकनीकी तथ्यों और बाहरी संसार के ज्ञान से व्यक्ति अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। परंतु जीवन को सार्थक और संतुलित ढंग से जीने के लिए केवल बाहरी वस्तुओं का ज्ञान ही नहीं, बल्कि व्यक्ति-व्यक्ति के बीच के संबंधों, उनके व्यवहार, उनकी सोच, भावनाओं और व्यक्तित्व को समझने की क्षमता भी आवश्यक है। यही है ''व्यक्तिज्ञान''।

वस्तुज्ञान हमें यांत्रिक बनाता है जबकि व्यक्तिज्ञान हमें मानवीय बनाता है। यही कारण है कि वस्तुज्ञान की अपेक्षा व्यक्तिज्ञान को अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

वस्तुज्ञान क्या है?

वस्तुज्ञान से आशय भौतिक वस्तुओं, विज्ञान, तकनीक, व्यापार, कला या विभिन्न विषयों के सामान्य ज्ञान से है। जैसे कंप्यूटर का ज्ञान, भौतिकी के नियम, गणितीय सूत्र, व्यापारिक व्यवस्थाएँ आदि। यह ज्ञान हमारी प्रगति में सहायक होता है, हमारी जीवन-स्तर को ऊँचा उठाता है और हमें नई-नई सुविधाओं से परिचित कराता है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी को गाड़ी चलाना आता है तो वह गाड़ी (वस्तु) के संचालन का ज्ञान रखता है। परंतु उस गाड़ी को चलाते समय यदि वह यातायात के नियमों का पालन नहीं करता, लोगों की सुरक्षा का ध्यान नहीं रखता तो उसका वस्तुज्ञान अधूरा और हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

व्यक्तिज्ञान क्या है?

व्यक्तिज्ञान का अर्थ है व्यक्ति के मन, विचार, भावनाओं और व्यवहार को समझना। यह केवल किसी की शारीरिक उपस्थिति तक सीमित नहीं है बल्कि उसके पूरे व्यक्तित्व का अध्ययन है। व्यक्तिज्ञान हमें यह बताता है कि सामने वाला व्यक्ति क्या सोचता है, उसकी समस्याएँ क्या हैं, उसके व्यवहार के पीछे क्या कारण हैं और हमें उससे किस प्रकार का संबंध स्थापित करना चाहिए।

उदाहरण के लिए- यदि कोई शिक्षक केवल पाठ्य-पुस्तकों का ज्ञान रखता है, तो वह वस्तुज्ञान सम्पन्न है। लेकिन यदि वह अपने विद्यार्थियों की मानसिकता, उनकी कमजोरियों, उनकी रुचियों और उनके व्यक्तिगत स्वभाव को समझता है, तो वह व्यक्तिज्ञान सम्पन्न है। ऐसे शिक्षक की शिक्षा कहीं अधिक प्रभावशाली होगी।

क्यों जरूरी है व्यक्तिज्ञान?

1. संबंधों की मजबूती के लिए - मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसके जीवन का अधिकांश हिस्सा संबंधों पर आधारित है जैसे परिवार, मित्रता, कार्यक्षेत्र, समाज आदि। यदि हमारे पास व्यक्तिज्ञान होगा तो हम अपने संबंधों को बेहतर ढंग से निभा सकेंगे। वस्तुज्ञान संबंधों को गहरा नहीं कर सकता, लेकिन व्यक्तिज्ञान से ही संवेदनशीलता, समझ और अपनत्व पैदा होता है।

2. नेतृत्व और प्रबंधन के लिए - एक सफल नेता या प्रबंधक वही होता है जो अपनी टीम के सदस्यों की भावनाओं और क्षमताओं को समझ सके। केवल तकनीकी ज्ञान से टीम नहीं चलाई जा सकती। यदि नेता के पास व्यक्तिज्ञान है तो वह हर सदस्य को उचित मार्गदर्शन दे सकता है और उनके बीच सामंजस्य बनाए रख सकता है।
3. संवाद और संचार की प्रभावशीलता के लिए - व्यक्तिज्ञान हमें संवाद करना सिखाता है। यह जानना कि कब क्या कहना चाहिए, किससे किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, यही व्यक्तिज्ञान की पहचान है। संचार केवल शब्दों का आदान-प्रदान नहीं है बल्कि भावनाओं और संवेदनाओं का आदान-प्रदान भी है।
4. संघर्ष निवारण के लिए - समाज में अक्सर विचारों का टकराव और मतभेद होते हैं। यदि व्यक्तिज्ञान हो तो हम स्थिति को शांतिपूर्वक हल कर सकते हैं। सामने वाले की मानसिक स्थिति को समझकर उसे उचित दिशा दी जा सकती है। केवल वस्तुज्ञान संघर्ष को सुलझाने में सक्षम नहीं होता।
5. मानसिक शांति और संतुलन के लिए - जिन व्यक्तियों के पास व्यक्तिज्ञान होता है, वे जीवन में तनाव को कम करते हैं। वे दूसरों की भावनाओं को समझकर उचित प्रतिक्रिया देते हैं, जिससे जीवन में अनावश्यक विवाद कम होते हैं।

वस्तुज्ञान बनाम व्यक्तिज्ञान

1. वस्तुज्ञान हमें 'कैसे करना है' यह सिखाता है, जबकि ''व्यक्तिज्ञान'' हमें 'कैसे रहना है' यह सिखाता है।
2. वस्तुज्ञान से हम भौतिक प्रगति करते हैं, लेकिन व्यक्तिज्ञान से हम सामाजिक और मानसिक प्रगति करते हैं।
3. वस्तुज्ञान से मशीनें बनाई जा सकती हैं, लेकिन व्यक्तिज्ञान से रिश्ते बनाए जाते हैं।
4. वस्तुज्ञान हमें विशेषज्ञ बना सकता है, लेकिन व्यक्तिज्ञान हमें नेता और आदर्श बना सकता है।

ऐतिहासिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य-

इतिहास गवाह है कि जिन लोगों ने व्यक्तिज्ञान को महत्त्व दिया, वही समाज और राष्ट्र का नेतृत्व कर सके। महात्मा गांधी ने वस्तुज्ञान की अपेक्षा व्यक्तिज्ञान को अधिक महत्त्व दिया। उन्होंने जनता के मनोभावों को समझकर अहिंसा और सत्याग्रह का मार्ग चुना। स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को जगाने के लिए उनके मन और आत्मबल को पहचाना। उनका व्यक्तिज्ञान ही उन्हें जन-जन का प्रेरणास्रोत बना गया। वहीं दूसरी ओर, केवल वस्तुज्ञान रखने वाले वैज्ञानिक या तकनीकी विशेषज्ञ समाज पर उतना प्रभाव नहीं डाल पाए जितना व्यक्तिज्ञान सम्पन्न नेता और विचारक डाल सके।

आधुनिक जीवन में महत्व

आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया में वस्तुज्ञान की कमी नहीं है। इंटरनेट और तकनीक के कारण कोई भी जानकारी तुरंत प्राप्त की जा सकती है। परंतु व्यक्तिज्ञान को विकसित करना आसान नहीं है। इसके लिए धैर्य, संवेदनशीलता, अनुभव और निरंतर अभ्यास चाहिए।

कार्यस्थल पर सफल वही व्यक्ति है जो सहकर्मियों के साथ सामंजस्य बना सके, टीम वर्क को समझ सके और समय पर सही निर्णय ले सके। यह तभी संभव है जब उसमें व्यक्तिज्ञान हो।

व्यक्तिज्ञान को कैसे विकसित करें?

1. सुनने की आदत डालें :- दूसरों की बात को ध्यान से सुनना व्यक्तिज्ञान की पहली सीढ़ी है।
2. संवेदनशील बनें :- दूसरों की भावनाओं को समझें और उनका सम्मान करें।
3. अनुभव से सीखें :- हर व्यक्ति अलग होता है, इसलिए अनुभव से ही उसका स्वभाव समझा जा सकता है।
4. आत्ममंथन करें :- अपने व्यवहार और प्रतिक्रिया का विश्लेषण करें, इससे व्यक्तिज्ञान मजबूत होता है।
5. समूह में कार्य करें :- समूह कार्य व्यक्ति की सहयोग भावना और समझ को बढ़ाता है।

आओ आओ रील बनाएं।

डॉ. दिनेश कुमार जांगिड 'सारंग'
अपर निदेशक

आजा सरला, आजा सलमा
काम करेगा अपना बलमा
सासू मां का मत तू सोचे
छोड़ भजन को, छोड़ दे कलमा
बहुत कर लिया चूल्हा चौका
अपनी किस्मत हम आजमाएं।
आओ आओ रील बनाएं।

कुछ भी बोलो छूट यहां पर
जिसको चाहे कूट यहां पर
फेसबुक हो, इंन्स्टाग्राम हो
दिल लोगों का लूट यहां पर
भाव जो मन में सोये अब तक
मिलकर आज उन्हें जगाएं।
आओ आओ रील बनाएं।

शक्ल-सूरत पर तुम मत जाओ
ज्ञान का घूंट ना कभी पिलाओ
बेमतलब की बात करो बस
कूड़ा कचरा कुछ भी खिलाओ
अनुशासन, मर्यादा, लाज को
अब अपने से दूर भगाएं।
आओ आओ रील बनाएं।

फोन एक ढंग का सा ले लो
इंटरनेट पर कुछ भी खेलो
घर वालों की छोड़ो चिंता
बाहर ज्ञान चाहे जो पेलो
इससे ज्यादा सुख है किसमें?
औरों के घर आग लगाएं।
आओ आओ रील बनाएं।

हमसे बच्चे क्या सीखेंगे
इसकी क्यों चिंता है करनी
अपनी है सबकी जिंदगानी
हमें तो अपनी पार है करनी।
चार लोग वो क्या बोलेंगे?
इसकी चिंता भाड़ में जाएं
आओ आओ रील बनाएं।

समय चला, पर कैसे चला, पता ही नहीं चला!

शिवधनी यादव
कर सहायक

जिन्दगी के आपाधापी में,
कब निकली उम्र हमारी यारों,
पता ही नहीं चला।
कंधे पे चढ़ने वाले बच्चे,
कब कंधे तक आ गये,
पता ही नहीं चला।
किराये के घर से शुरू हुआ था सफर अपना,
कब अपने घर तक आ गए,
पता ही नहीं चला।
साईकिल के पैडल मारते हुए,
हांफते थे उस वक्त कब से हम कारों में घूमने लगे हैं,
पता ही नहीं चला।
कभी थी जिम्मेदारी हमें माँ बाप की,
कब बच्चों के लिए हुए जिम्मेदार हम,
पता ही नहीं चला।
एक दौर था जब दिन में भी, बेखबर सो जाते थे,
कब रातों की उड़ गई नींद ,
पता ही नहीं चला।
जिन काले घने बालों पर,
इतराते थे कभी हम,
कब सफेद होना शुरुकर दिया,
पता ही नहीं चला।
दर-दर भटके थे नौकरी की खातिर,
कब रिटायर होने का समय आ गया,
पता ही नहीं चला।
बच्चों के लिए कमाने बचाने में,
इतने मशगुल हुए हम,
कब बच्चे हमसे दूर हुए,
पता ही नहीं चला।
भरे-पूरे परिवार से सीना चौड़ा रखते थे हम,
अपने भाई बहनों पर गुमान था,
उन सबो का साथ छूट गया
कब परिवार हम दो पर सिमट गया,
पता ही नहीं चला।
अब सोच रहे थे कुछ अपने लिए भी करें
पर शरीर साथ देना बंद कर दिया,
पता ही नहीं चला --

अनिल कुमार
सहायक निदेशक

अल्पना गुप्ता
अपर सहायक निदेशक

अपनी राह तू चल अकेला !

नहीं आसमाँ साथ चलेगा
सूरज तेरे बिन भी जलेगा
एक बार गर अवसर बीता
फिर तो भैया हाथ मलेगा
कोई आए, कोई जाये
दुनिया का तो रहेगा मेला
अपनी राह तू चल अकेला ।

शीशे जैसा मन रख अपना
जैसा दिखता वैसा जपना
चाहे कोई कुछ भी कहले
धीरज तेरा साथ में रखना
सच कहने का यही फ़ायदा
याद रखने का नहीं झमेला
अपनी राह तू चल अकेला

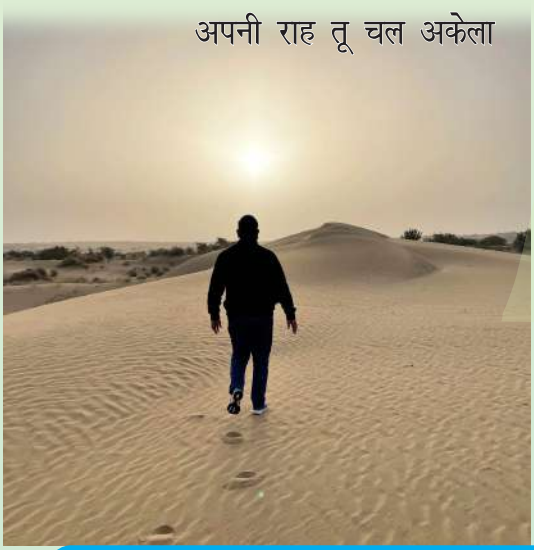

उसे उधार दो !

एक मित्र ने हमसे कहा-
'अमाँ यार,
एक सज्जन
रोज मेरे घर आते हैं
चाय नाश्ते के साथ
दिमाग भी खाते हैं
कोई उपाय बतलाओ
हमें उनसे छुटकारा दिलवाओ।'

हमने कहा-
'ऐसा करो मेरे यार
उसे तुम दे दो
कुछ रूपये उधार
फिर देखना
ऐसी राहत मिल जायेगी
वह तो क्या
उसकी परछाई भी
तुम्हारे पास ना आयेगी।

हर बात लिखी नहीं जा सकती

पूजा गुप्ता
अपर सहायक निदेशक

मैं लिख नहीं सकती,
हर एक बात,
जो महसूस करती हूँ,
फिर भी लिखती हूँ।
मुझे वो शब्द नहीं मिलते,
जिससे हर बात लिखी जा सकती है,
फिर भी लिखती हूँ।
एक बेटी होना,
एक बहु होना,
एक पत्नी होना,
एक माँ होना,
हर क़िरदार को,
दीदार करने को खड़े हैं लोग,
और मैं सबको खुश रख नहीं सकती,
फिर भी रखती हूँ।

घरेलू महिला से,
कामकाजी महिला तक,
खाना बनाने से,
फाइल में लिखने तक,
खुद को सँभालने से,
सबको सँभालने तक,
सब कर लेती हूँ,
पर पता नहीं क्यों,
कुछ को ऐसा लगता है,
मैं सब कर नहीं सकती,
फिर भी मैं करती हूँ।

अग़र समझना हो नारी को,
तो शब्दों से नहीं,
नजरों से समझो,
भावों से समझो,
समझो मेरी चुनैतियों को,
क्योंकि हर बात लिखी नहीं जा सकती,
बस महसूस की जा सकती है।

हो सके तो, तुम वो पढ़ना,
जो मैं लिख नहीं सकती,
क्योंकि हर बात लिखी नहीं जा सकती ।

लोय जुलियस
कर सहायक

तारे

आसमान में जितने तारे
रहते हैं सब मिलके सारे
रात बनाते बड़ी सुहानी
देख के नानी कहे कहानी
चंदा मामा इनके नेता
इनकी खबर वही है लेता
तरह तरह के चित्र बनाते
ध्रुवजी सबको दिशा बताते

कोई दूर कोई पास खड़ा है
सप्त ऋषि में कोई गड़ा है।
आसमान को यही सजाते
सुंदर सा आंगन है बनाते
सूरज से यह सब डर जाते
रोज सुबह गायब हो जाते
जाता सूरज फिर यह आते
चलो नियम से बात बताते।

गुलदस्ता

एक साथ जब फूल हैं मिलते
गुलदस्तें में हैं वो खिलते।
लाल गुलाब हो चाहे चमेली
सब करते इसमें अठखेली
गेंदा जरबेरा या लिली
लाल गुलाबी हरी या पीली
हर अवसर पर काम है आता
जो देता वो प्यार बढ़ाता
प्यार की खुशबू यह फैलाए
दूर हैं, उनको पास यह लाए।
अगर किसी का दिन हो बनाना
गुलदस्ता तुम देकर आना।

मंगल प्रसाद की शहर यात्रा

भूमिका गौतम
कर सहायक

मंगलप्रसाद उर्फ़ मंगलू, गाँव का भोला-भाला लड़का था। बैल-गाड़ी चलाते-चलाते उसने तय किया कि अब तो शहर जाकर "बड़ा आदमी" बनना है। गाँव वालों ने समझाया-

"बेटा, शहर में काम आसान नहीं है।" मंगल ने हँसते हुए कहा- "अरे चाचा, वहाँ तो सबकुछ बिजली से चलता है, मैं तो मज़े ही करूँगा।"

और इस आत्मविश्वास के साथ वह देश के सबसे बड़े शहर आ धमका। जैसे ही वह बस से उतरा, सामने ट्रैफिक का समुद्र था। गाँव में जहाँ दिनभर एक ट्रैक्टर गुज़र जाए तो बड़ी घटना मानी जाती थी, वहीं यहाँ हर सेकंड सौ गाड़ियाँ निकल रही थीं। मंगल ने हैरान होकर पास खड़े ऑटो वाले से पूछा-"भैया, ये सब कहाँ भाग रहे हैं?" ऑटो वाला बोला- "अरे भाई, यहाँ सबको जल्दी है। पर मंज़िल किसी की भी नहीं आती।"

मंगल ने सबसे पहले ठिकाने की तलाश की। दलाल मिला, जिसने उसे 1 कमरे का फ्लैट दिखाया। कमरा इतना छोटा कि मंगल को लगा ये तो कबूतरखाना है। उसने पूछा- "भैया, इसमें परिवार कैसे रहेगा?" दलाल बोला- "परिवार? इसमें तो आपकी साँसें भी मुश्किल से रहेंगी।" लेकिन किराया सुनकर मंगल के होश उड़ गए-"इतने में तो मैं गाँव में पूरा खेत खरीद लूँ।" फिर भी मजबूरी थी, फ्लैट ले लिया।

मंगल को एक कॉल सेंटर में नौकरी मिली। काम था- दिनभर हैडफ़ोन लगाकर लोगों से कहना "सर, आप हमारी स्कीम क्यों नहीं ले रहे?" गाँव में तो वह आधा दिन खेत में सो लेता था, लेकिन यहाँ आठ घंटे कुर्सी से बंधे रहना पड़ता था। पहली मीटिंग में बॉस ने कहा- "टारगेट पूरा करना है।" मंगल ने भोलेपन से पूछा- "सर, टारगेट क्या होता है?" बॉस ने घूरते हुए जवाब दिया- "यही कि ज़िंदगी भर तुम्हें चैन नहीं मिलेगा।"

मंगल ने सोचा कि कार और बाइक तो उसके बस में नहीं, इसलिए मेट्रो से सफ़र करेगा। पर जैसे ही वह मेट्रो स्टेशन पहुँचा, सामने कतारों का युद्धक्षेत्र था। ट्रेन आई, दरवाज़ा खुला और लोग ऐसे कूदे जैसे किसी युद्ध में घुस रहे हों। मंगल ने हिम्मत की और भीड़ के साथ धक्का खाकर अंदर घुसा। किसी ने उसके पैर पर पैर रख़ दिया, किसी ने बैग उसके चेहरे पर मार दिया। वह चिल्लाया- "भाइयो, थोड़ा इंसानियत रखो।" कोई बोला- "ये मेट्रो है भाई, यहाँ इंसानियत नहीं, फिटनेस चाहिए।"

सप्ताहांत पर मंगल को शहर का असली रंग देखने की इच्छा हुई। वह मॉल पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि सब लोग घूम रहे हैं, सेल्फी ले रहे हैं और बड़े-बड़े बैग उठाए हुए हैं। मंगल ने एक दुकान में जाकर पूछा- "भैया, ये टी-शर्ट कितने की है?" सेल्समैन बोला- "सिर्फ़ 2499 रुपये।" मंगल हैरान- "भैया, इतनी में तो गाँव में पूरी भैंस आ जाए।" पास खड़े लड़के ने हँसकर कहा- "भाई, यहाँ भैंस नहीं, ब्रांड बिकता है।"

गाँव में माँ के हाथ की रोटी, दाल और सब्ज़ी खाने वाला मंगल शहर में खाना ढूँढ़ने निकला। होटल में गया तो दाल की एक प्लेट 200 रुपये की थी। उसने सोचा- "इतने में तो गाँव में पूरा हफ़्ते का राशन आ जाए।" फिर किसी ने कहा- "भाई, ऐप से मँगवा ले।"

उसने ऐप डाउनलोड किया और खाना ऑर्डर किया। डिलीवरी बॉय देर से आया, तो मंगल गुस्से में बोला- "तू इतनी देर

से क्यों आया?" डिलीवरी वाला बोला- "भाई, तुम्हारे खाने से पहले मैंने चार और पेट भरे हैं।"

फ्लैट में रहते हुए मंगल को असली शहरियत का अनुभव तब हुआ जब बिजली चली गई और पानी भी नहीं आया। वह बाल्टी लेकर नीचे भागा, वहाँ आधा मोहल्ला पहले से लाइन में खड़ा था। एक बूढ़े अंकल बोले- "बेटा, शहर में पानी वही पाता है जो बाल्टी पहले रख देता है।" मंगल को लगा-गाँव में कुआँ था, तालाब था, यहाँ सबकुछ है, बस पानी ही नहीं है।

गाँव में हर पड़ोसी परिवार जैसा होता है। मंगल ने सोचा कि शहर में भी दोस्ती करेगा। उसने सामने वाले दरवाज़े पर दस्तक दी। पड़ोसी ने दरवाज़ा खोला, ऊपर से नीचे तक देखा और बोला- "जी, किससे मिलना है?" मंगल मुस्कुराकर बोला- "भैया, मैं आपका पड़ोसी हूँ।" पड़ोसी ने ठंडी आवाज़ में कहा- "ठीक है, मिल लिया। अब अगली बार व्हाट्सऐप पर बात कर लेना।"

कुछ महीने बिताने के बाद मंगल ने सोचा- "गाँव में शांति थी, खेत थे, तालाब थे। यहाँ भीड़ है, प्रदूषण है, किराया है और ट्रैफिक है। गाँव में लोग एक-दूसरे को जानते थे, यहाँ पड़ोसी भी अनजान है। गाँव में सपने बड़े थे और खर्चे छोटे, यहाँ सपने छोटे और खर्चे बड़े। उसने एक दिन ऑफिस में बॉस से कहा- "सर, मैं गाँव लौट रहा हूँ।" बॉस बोला- "क्यों? यहाँ प्रगति है।" मंगल ने हँसकर कहा- "सर, यहाँ प्रगति आपकी है, परेशानी हमारी।"

मंगल वापस गाँव चला गया। अब शहर से आए रिश्तेदारों से कहता है- "भाई, शहर में सबकुछ है, बस ज़िंदगी ही नहीं है। वहाँ लोग मेट्रो में धक्के खाते हैं, ऑफिस में डाँट खाते हैं और घर आकर मकान मालिक की गालियाँ खाते हैं। गाँव में भूख से लड़ना पड़ता है, पर शहर में साँस लेने तक के लिए लड़ना पड़ता है।

गांव आये शहर के लोग सुनकर मुस्कुराते हुए सोचने लगे-"काश, हम भी मंगल की तरह गाँव लौट पाते।"

शहीद भगत सिंह

हर्ष कार्तिकेय मिश्रा
कक्षा-5
पुत्र श्री अमित कुमार मिश्रा,
अपर निदेशक

भगत सिंह थे वीर हमारे,
भारत माँ के राज दुलारे।
हंसते हंसते जेल गए थे,
सारे दुःख वे झेल गए थे।

युवाओं को राह दिखाई
आजादी की लड़ी लड़ाई
अपनी मां का मान बढाया
इंकलाब का गीत था गाया।

सच्चे रखे विचार अपने
देखे आजादी के सपने,
अन्यायी से डरे नहीं वो
कायर जैसे मरे नहीं वो।

भगत सिंह का नाम अमर है,
हर बच्चे के दिल में घर है।
भारत मां के सपूत प्यारे
हम सबकी आंखों के तारे।

भरतनाट्यम–भारत की नृत्य–कला

हर्षिका कीर्ति मिश्रा
कक्षा–5
पुत्री श्री अमित कुमार मिश्रा,
अपर निदेशक

भारत कला और संस्कृति का देश है। यहाँ अनेक तरह के शास्त्रीय नृत्य प्रचलित हैं। उन्हीं में से एक है ''भरतनाट्यम''। यह नृत्य दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य से शुरू हुआ और आज पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। बच्चों के लिए भरतनाट्यम न केवल नृत्य है, बल्कि यह सीखने और समझने का एक सुंदर माध्यम भी है। यह लगभग 2000 वर्ष पुराना है।

भरतनाट्यम नृत्य की सबसे बड़ी खूबी है कि इसमें शरीर, मन और भावनाओं का मेल होता है। नृत्य करते समय कलाकार हाथ, आँख, चेहरे और पैरों की हरकतों से कहानी सुनाते हैं। इस नृत्य में संगीत, लय और ताल का खास महत्व होता है। भरतनाट्यम में कलाकार सुंदर पोशाक पहनते हैं, गहनों से सजते हैं और माथे पर तिलक लगाते हैं।

इस नृत्य की सबसे खास बात है ''अभिनय'' यानी भाव-प्रदर्शन। चेहरे के भाव और आँखों की भाषा से ही नर्तक देवताओं की कहानियाँ, लोककथाएँ और जीवन के संदेश बच्चों तक पहुँचाते हैं।

भरतनाट्यम सीखने के लिए धैर्य और अभ्यास की ज़रूरत होती है। बच्चे जब इसे सीखते हैं तो सबसे पहले उन्हें पैरों की ताल (अड़ी-तड़ी की ध्वनियाँ), हाथों के मुद्राएँ और शरीर की सही मुद्रा सिखाई जाती है। फिर धीरे-धीरे भाव और अभिनय जोड़कर पूरी नृत्य रचना सीखी जाती है। भरतनाट्यम में गुरू को 'अका' कहकर बुलाते है। इसमें कुल 6 भाग होते हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं- अलारिप्पु, जतिस्वरम, शबदम, वर्णम, पदम् और तिल्लाना।

भरतनाट्यम बच्चों के लिए कई तरह से उपयोगी है। यह न केवल नृत्य-कला सिखाता है बल्कि अनुशासन, धैर्य और एकाग्रता भी बढ़ाता है। इस नृत्य से शरीर लचीला और मजबूत बनता है। साथ ही, यह बच्चों को भारतीय संस्कृति, पौराणिक कथाओं और भगवान की कहानियों से जोड़ता है।

दीया और तूफ़ान

राहुल देव
सहायक निदेशक

एक छोटे से गाँव में एक लड़का था, अर्जुन। वह बहुत गरीब था, लेकिन उसके सपनों की उड़ान ऊँची थी। हर दिन वह स्कूल जाने से पहले गाँव के मंदिर में एक दीया जलाता था। लोग उसका मज़ाक उड़ाते "इस दीये से क्या होगा? तू खुद अंधेरे में है!"

लेकिन अर्जुन कहता, "जब तक दीया जल रहा है, उजाला हार नहीं सकता।"

एक दिन गाँव में भयंकर तूफ़ान आया। बिजली गुल हो गई, पूरा गाँव अंधेरे में डूब गया। लोग घबराए हुए थे। तभी अर्जुन दौड़ता हुआ मंदिर पहुँचा और अपने जलते हुए दीये को लेकर आया। उसी दीये की लौ से लोगों ने अपने घरों में रोशनी की।

गाँव के बुजुर्ग बोले, "आज समझ आया कि छोटे से दीये की भी बड़ी ताकत होती है।"

अर्जुन ने मुस्कराकर कहा, "सपनों की तरह, बस जलाए रखना होता है। एक न एक दिन वो रास्ता ज़रूर दिखाते हैं।"

सीख : कोई भी सपना या प्रयास छोटा नहीं होता। निरंतरता और विश्वास से अंधेरे को भी रोशनी में बदला जा सकता है।

आखिरी रेस

मैं विवान, दसवीं कक्षा का छात्र हूं। पढ़ाई में औसत, और खेलों में हमेशा पीछे। हर साल खेल दिवस आता और मैं दर्शक बनकर बैठ जाता।

इस बार खेल अध्यापक ने कहा, विवान, तुम्हें 400 मीटर रेस में भाग लेना है।

मैं चौंक गया - "मैं? क्यों?"

उन्होंने सिर्फ इतना कहा, "कभी-कभी हमें खुद को भी हैरान करना होता है।"

प्रतियोगिता का दिन आया। सभी प्रतिभागी मुझसे तेज़ और अनुभवी थे। सीटी बजी और हम दौड़ पड़े।

पहले 200 मीटर में मैं सबसे पीछे था। सांसें तेज, पैर थके। तभी दर्शकों में मेरी माँ दिखीं मुस्कराते हुए, जैसे मैं पहले ही जीत चुका हूं। मेरे भीतर कुछ जागा। मैंने रफ्तार बढ़ाई। आखिरी मोड़ पर एक लड़का गिरा, बाकी लड़खड़ा गए।

मैंने हिम्मत नहीं हारी, दौड़ता रहा और जब फिनिश लाइन पार की मैं तीसरे नंबर पर था।

पहली बार मुझे मेडल मिला।

लेकिन असली जीत? असली जीत वो थी जब पूरे स्कूल ने तालियाँ बजाईं-एक ऐसे छात्र के लिए, जिसने हारने से आगे बढ़ने की हिम्मत की।

सीख : जीत हमेशा पहले आने में नहीं होती। कभी-कभी खुद पर भरोसा करके मैदान में उतरना ही सबसे बड़ी जीत होती है।

नन्ही कूंची

दिव्या जांगिड

कक्षा - 12
पुत्री डॉ. दिनेश कुमार जांगिड
अपर निदेशक

शोभित यादव

पुत्र श्री संतोष यादव
कर सहायक

दर्श जांगिड

पुत्र डॉ. दिनेश कुमार जांगिड
अपर निदेशक

मास्टर जन्मेजय

पुत्र श्री हंसा भट्ट
अपर सहायक निदेशक

प्रशासन विभाग, राजभाषा एवं ईएमसी विभाग, मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत की टीम के साथ टीम प्रभारी अपर निदेशक श्री अमित कुमार मिश्रा एवं सहायक निदेशक श्री आशीष शर्मा एवं श्री धर्मपाल

कल्याण मंडल, मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत टीम के साथ टीम प्रभारी अपर निदेशक डॉ. दिनेश कुमार जांगिड एवं सहायक निदेशक श्री अनिल कुमार

मरम्मत एवं रखरखाव, हायरिंग शाखा, मानव संसाधन विकास महानिदेशालय, साकेत की टीम के साथ टीम प्रभारी संयुक्त निदेशक डॉ. गणेश पोटे, सहायक निदेशक श्री लाजपत राय एवं सहायक निदेशक श्री हवा सिंह

मानव संसाधन विकास महानिदेशालय (आई एंड डब्ल्यू/ईएमसी)

सी-4, प्रथम तल, इरकोन भवन, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, साकेत, नई दिल्ली-17

ई-मेल - dghrdcbic-saket@gov.in

PRINTCOM INDIA
+91-9899004446